विक्रम बेताल की अनकही गाथा

लेखक: श्रीकांत विश्वकर्मा

shrikantvishwakarmaa@gmail.com

copyrithed by Shrikant Vishwakarma

9930921181

SWA MEMERSHIP -21084

SRAI- MEMBER

बेताल जब माँ की पेट में था और गंधर्वराज ने उसकी माँ को छोड़ दिया तो क्या हुआ ? बेताल कैसे जन्मा ? कैसे उसे सूखे कुंवे में फेंक दिया गया ? कैसे उसे चमगादड़ों ने पाला ? कैसे वो बड़ा हुआ और उसका नाम बेताल पडा ? कैसे उसे एक वृक्ष पर जब पेड़ के नीचे ऋषि और तांत्रिक तप सिद्धि करने आये तो बेताल को उन्ही से देख - सीखकर सिद्धि मिली और कैसे उसने अपने गंधर्व पिता को सिंघासन सहित ज़मीन पर गिराकर उसकी हत्या की तो माँ ने गुस्से में आकर पुत्र को शाप दे दिया कि अब से जो भी इस सिंघासन पर बैठेगा बेताल को उसका गुलाम बनना पड़ेगा ..

विक्रम बेताल
की
अनकही गाथा
श्रीकांत विश्वकर्मा

1. प्रस्तावना और रहस्य की शुरुआत

- उज्जैनी की सदियों पुरानी रातों में पिशाचों का आतंक।
- राजा के रूप में वृद्ध विक्रम का परिचय।
- विक्रम का बेताल वन में जाना और पिशाचों से संवाद।
- बेताल की खोज का रहस्य और तांत्रिक योगिराज का उद्देश्य उजागर।
- बेताल का सिंघासन और गुलामी का रहस्य।

2. बेताल से पहली भेंट

- विक्रम द्वारा तांत्रिक को बेताल सौंपना।
- तांत्रिक द्वारा बेताल की यातना और विक्रम का बचाव।
- बेताल , विक्रम का ऋणी बनता है।

3. उज्जैनी की राजनीति और षड्यंत्र

- भर्तहरी युद्ध पर , चित्रलेखा संतान की चाह में।
- विक्रम का महल लौटना और रानी चित्रलेखा की उपेक्षा।
- विक्रम और बेताल की मित्रता की शुरुआत – युद्ध में भर्तहरी की रक्षा।

4. बेताल का रहस्य और उत्पत्ति -

- बेताल का जन्म , त्याग , चमगादड़ों द्वारा पालन।
- सिद्धि प्राप्त करना और पिता की हत्या।
- माँ का शाप और सिंघासन का छिपाया जाना।

5. चित्रलेखा का षड्यंत्र

- झुलिया काकी द्वारा विक्रम की उपस्थिति का भान।
- शैतान बच्चे को गोद लेना – नर-पिशाचिनी की चाल।
- भर्तहरी सम्मोहन में , चित्रलेखा का लालच बढ़ता है।

6. नर-पिशाचिनी का षड्यंत्र और योगिराज की वापसी

- उज्जैनी नष्ट करने की प्रतिज्ञा।
- झुलिया काकी का चित्रलेखा पर प्रभाव।
- शैतान बच्चे का असली उद्देश्य उजागर।

7. विक्रम की यात्रा - 32 गुणों की खोज की शुरुआत

- बेताल द्वारा महल की रक्षा और यात्रा का आरंभ।
- अलग-अलग स्थलों पर विक्रम की सहायता और गुण प्राप्ति।
- हर गुण एक पुतली में निहित , रहस्यमय पात्रों से भेंट।

8. राजनैतिक और भावनात्मक द्वंद्व

- विक्रम और राजकुमारी कलिंगसेना का प्रेम।
- युद्धाजित की शर्त और विक्रम का त्याग।
- भर्तहरी का सिंहासन त्याग और चित्रलेखा की नफरत।

9. बेताल की माँ की खोज और नर-पिशाचिनी से टकराव

- विक्रम और बेताल द्वारा बेताल की माँ की खोज।
- माँ की हत्या का रहस्य और बेताल का बदला।
- नर-पिशाचिनी को हराने का एकमात्र उपाय – सिंघासन का अधिकार।

10. 32 गुणों का रहस्य और अंतिम पुतली

- 31 पुतलियाँ प्राप्त।
- बेताल का अचानक गायब हो जाना।
- योगिराज और नर-पिशाचिनी का आक्रमण।

11. निर्णायक युद्ध और पुनर्जन्म

- वृद्ध विक्रम का बेताल से पुनर्मिलन।
- “32 वाँ गुण = धैर्य” — उज्जैनी में सिंघासन प्रकट होता है।
- विक्रम का फिर से जवान होना और दिव्य तलवार का प्राप्त होना।
- नर-पिशाचिनी का अंत।

12. अंतिम मोड़ और भविष्य की धमकी

- योगिराज की भागने में सफलता।
- नर-पिशाचिनी का शैतान पुत्र अपनी माँ की मौत का बदला लेने को तैयार।

अध्याय 1: उज्जैनी की रात और वृद्ध राजा

सदियों पुरानी उज्जैनी…
अंधेरे की चादर में लिपटी हुई, रह-रह कर रहस्यमयी सन्नाटे को चीरती किसी उड़ती हुई परछाई की सरसराहट… और फिर अचानक…

फड़फड़ाहट **…** हजारों चमगादड़ों की **!**
जैसे आसमान फट गया हो। महल के ऊपर से, गलियों से, शिवालय के प्राचीन शिखरों से … पिशाच-चमगादड़ झुंड दर झुंड आ रहे थे। हर दिशा से।

लोग अपने घरों में दरवाज़े बंद कर चुके थे। बच्चे कांप रहे थे। पुरोहित वेद-मंत्रों का जाप कर रहे थे… लेकिन डर किसी का कम नहीं हुआ।

महल के अंदर , सिंहासन कक्ष की ओर तेज़ कदमों की आहट होती है।

“अब और नहीं !”

एक गरजती हुई वृद्ध आवाज़ महल की दीवारों से टकराती है।

राजा अपनी गद्दी से खड़ा होता है। चेहरा झुर्रियों से भरा … मगर आँखों में वही पुराना तेज़।

राजा विक्रम **!**

पर अब वो बूढ़े हो चुके थे। बाल सफेद , कंधे झुके , लेकिन हाथ में एक मशाल और सिर पर लिपटा ऊनी कम्बल अभी भी उनकी जिजीविषा की गवाही दे रहे थे।

"हम फिर से उज्जैनी की छांव में डर को कैसे पनपने दें ? जब तक मैं जीवित हूं , कोई भी इस नगर पर भय की छाया नहीं फैला सकता। "

वो धीरे -धीरे महल से निकलते हैं। रक्षकों को मना कर देते हैं।

अकेले … अंधेरी रात में … मशाल जलती हुई … वो चलते हैं .

बेताल वन
उज्जैनी से दूर … एक वीरान और भयावह जंगल। जहां रात का अंधकार दिन में भी पसरा रहता है। उसी वन के बीचोंबीच , एक सूखा पुराना वटवृक्ष।

विक्रम वहां रुकते हैं। मशाल ज़मीन में गाड़ते हैं।

"अब आ जाओ…!" – वृद्ध विक्रम बोलते हैं।

कुछ क्षण सन्नाटा रहता है। फिर हवा काँपती है … और चारों ओर से अजीब फड़फड़ाहट …

चार काले धुएं जैसे पिशाच प्रकट होते हैं — आधे चमगादड़ , आधे इंसानी आकृति में।

"राजा विक्रम ! हमें माफ़ करिए … पर आज आपके पास आना हमारी मजबूरी है !" — उनमें से एक पिशाच डरते हुए बोलता है।

"क्या चाहिए तुम्हें ?" – विक्रम की आवाज़ में कोई डर नहीं।

दूसरा पिशाच बोला , “हमें मार डालेगा वो … वो योगिराज ! अगर हमने उसे बेताल का पता नहीं बताया , तो वो हमें जला कर भस्म कर देगा। ”

तीसरा पिशाच – “राजा विक्रम ! आप ही आखिरी व्यक्ति हैं जो बेताल को जानते थे … आप ही बता सकते हैं वो कहाँ है !”

विक्रम की आँखों में एक पुराना दर्द झलकता है। फिर धीरे से बोलते हैं —
“तुम नहीं जानते … सिर्फ योगिराज ही नहीं, बल्कि नर-पिशाचिनी भी बेताल की तलाश में है … ताकि उसे अपना गुलाम बना सके।”

सारे पिशाच चौंक जाते हैं। “गुलाम…? बेताल को कोई गुलाम बना सकता है?”

विक्रम गहरी साँस लेते हैं –
“हाँ, अगर किसी को वो ▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯ मिल जाए … तो बेताल उसे अपना स्वामी मानने पर मजबूर हो जाएगा।”

पिशाच चौकते हैं, “बेताल सिंघासन…? हमने तो कभी नहीं सुना…”

विक्रम मुस्कुराते हैं। “उस दिव्य और रहस्यमयी सिंघासन के बारे में मुझे भी तभी पता चला जब…”

"जब मैंने पहली बार बेताल से भेंट की थी **...**"

और यहीं से कहानी एक गहरे फ्लैशबैक में प्रवेश करती है…

अध्याय 2: बेताल की पहली भेंट - गुफा, तांत्रिक और राज़

फ्लैशबैक में उज्जैन का वह समय जब विक्रम एक युवा, तेजस्वी और पराक्रमी राजकुमार थे। युद्ध-कौशल में निपुण, धर्मपरायण, लेकिन कहीं भीतर एक अधूरापन लिए … आत्म-खोज में भटकते हुए।

उस समय उज्जैनी के दक्षिण में एक अंधकारमयी गुफा थी — ▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯ — जहाँ वर्षों से एक रहस्यमयी तांत्रिक "योगिराज अचिन्त्य" साधना कर रहा था। उसे एक ऐसी आत्मा की ज़रूरत थी जो उसे सिद्धि दिला सके — और वो आत्मा थी … बेताल।

वही तांत्रिक एक दिन विक्रम से मिला था।

"राजकुमार विक्रम ... तुम्हें क्या चाहिए ?"

“एक उद्देश्य। एक ऐसा काम जिसे कर सकूं और जिससे इस जीवन का अर्थ निकले।” — विक्रम ने कहा था।

योगिराज ने विक्रम को एक रहस्यमयी प्रस्ताव दिया —
“अगर तुम बेताल नामक पिशाच को पकड़कर मेरे पास लाओ … तो तुम्हें जीवन की सबसे गूढ़ शक्ति प्राप्त होगी … और मैं तुम्हें ब्रह्म रहस्य दूँगा।”

विक्रम बिना देर किए तैयार हो गए।

… और फिर उसी रात विक्रम जंगल के भीतर उस श्मशान तक गए, जहां वृक्ष की शाखा पर बेताल उल्टा लटका हुआ था।

पहली बार विक्रम ने बेताल को देखा।

उसका शरीर नीला, बाल बिखरे हुए, आँखें चमकती हुईं — मगर वो सो रहा था।

विक्रम ने मंत्र पढ़ते हुए बेताल को पकड़ा … और जैसे ही बेताल ने आँख खोली … एक रहस्यमयी आवाज़ गूंजी —
“राजकुमार**!** तुम नहीं जानते तुम क्या करने जा रहे हो**…”**

पर विक्रम ने बिना विचलित हुए बेताल को उठा लिया और तांत्रिक की गुफा की ओर चल पड़े …

त्रिकालगुफा — एक घातक रहस्य का द्वार

गुफा के अंदर का दृश्य रहस्यमयी और भयावह था। दीवारों पर चमगादड़ों की खोपड़ियाँ टंगी थीं, हड्डियों से बने दीपक जल रहे थे।

विक्रम ने बेताल को योगिराज के सामने रख दिया।

तांत्रिक ने तुंरत बेताल पर एक तांत्रिक बंधन डाल दिया।
और फिर शुरू हुई यातना …

“बता**,** कहाँ है तेरा सिंघासन**?!”**

बेताल चीख रहा था, तड़प रहा था। उसका चेहरा पीड़ा से भरा हुआ था।

विक्रम स्तब्ध खड़ा देख रहा था … यह दृश्य उसके भीतर कुछ तोड़ रहा था।

“मैंने तुमसे कहा था कि मुझे आत्मा चाहिए, पर तुमने मुझसे ये नहीं कहा कि तुम उसे यातनाएं दोगे!” – विक्रम ने कहा।

योगिराज हँसा –
"राजकुमार**!** तूने मुझे आत्मा दी**,** अब वो मेरा अधिकार है। मैं तुझे वही शक्ति दूँगा जिसकी तूने चाहत की थी**…** मगर उसके पहले मैं जान लूँगा **—** बेताल सिंघासन कहाँ है**!"**

सहसा, बेताल की पीड़ा देख विक्रम का धैर्य टूट गया।

उसने अपनी तलवार खींच ली —
“बस बहुत हुआ**!** ये अन्याय है**…”**

और अगले ही क्षण … तांत्रिक पर विक्रम की तलवार चल चुकी थी।

एक गहरा चीखता हुआ मंत्र अधूरा छूट गया …

योगिराज की मृत्यु हो गई।

बेताल ज़मीन पर गिर पड़ा … लहूलुहान, पर जीवित।

“तुमने … मेरी जान … बचाई है …”

बेताल की आँखों में पहली बार भय नहीं … कृतज्ञता थी।

“अब… मैं तुम्हारा ऋणी हूँ, विक्रम … और ये ऋण… मैं तुम्हारे अंत तक निभाऊंगा …”

विक्रम ने उसकी ओर देखा। उसकी आत्मा जैसे किसी नई ऊर्जा से भर गई थी।

"तुम कौन हो बेताल?"

बेताल मुस्कुराया —
"मैं … एक श्रापित आत्मा हूँ … और मेरा रहस्य … अभी बाकी है …"

अध्याय 3: बेताल का रहस्य - सिंघासन का श्राप और अधूरी कथा

तांत्रिक योगिराज की मृत्यु के बाद …
गुफा की दीवारें हिल रही थीं। मंत्रों की अधूरी ध्वनि अब शून्य में विलीन हो चुकी थी। चारों ओर सन्नाटा था, लेकिन उस सन्नाटे में अब एक नई दोस्ती की शुरुआत हो चुकी थी — विक्रम और बेताल के बीच।

विक्रम ने बेताल को सहारा देकर गुफा से बाहर निकाला।

अगली सुबह, दोनों एक शांत जलाशय के किनारे बैठे थे। सूरज की किरणें बेताल के चेहरे पर पड़ रही थीं, मानो पहली बार कोई किरण उसे सुकून दे रही हो।

“अब जब मैंने तुम्हें बचा लिया है … और तुमने मेरा ऋण स्वीकार किया है … तो क्या मैं तुम्हारा रहस्य जान सकता हूँ?” – विक्रम ने शांत स्वर में पूछा।

बेताल ने आँखे मूँदी और फिर धीरे-धीरे बोलना शुरू किया —

"मैं जन्म से नहीं, शाप से बना हूँ …"

“मेरा जन्म गंधर्वलोक में हुआ। मेरे पिता थे ***□□□□□□□□□□ □□□□□□□□,*** और माता थीं ***□□□□□□□□*** — एक अप्सरा। वे दोनों स्वर्ग की सबसे सुंदर जोड़ी माने जाते थे। लेकिन मेरे जन्म से कुछ दिन पहले ही …”

बेताल की आवाज भारी हो गई।

“...मेरे पिता को एक महायोगिनी ने श्राप दिया कि 'तेरा पुत्र तुझसे बड़ा और शक्तिशाली होगा और तेरा अंत लाएगा।’ पिता डर गए ... और उन्होंने मेरी माँ को त्याग दिया ...!”

“जब मैं माँ के गर्भ में था, उन्होंने मुझे छुपाया ... और जैसे ही मेरा जन्म हुआ, मुझे एक सूखे कुएँ में फेंक दिया गया ... ताकि कोई मुझे खोज न सके।”

विक्रम स्तब्ध रह गया — “फिर तुम बचे कैसे?”

बेताल ने आकाश की ओर देखा —
“चमगादड़ों ने मुझे पाला ... मैं उस अंधे कुएँ में उनके साथ जीता रहा। वही मेरे मित्र बने, वही मेरे गुरु। उन्हीं के साथ मैंने पहली बार आकाश में उड़ना सीखा ...”

"सिद्धि कैसे प्राप्त की?"

“एक दिन ... कुछ तांत्रिक और ऋषि उस वृक्ष के नीचे आए जहाँ मैं उल्टा लटकता था। वे तपस्या कर रहे थे। मैं छुपकर उनकी बातें सुनता, उनके मंत्रों को समझने की कोशिश करता। वर्षों की छाया में ... धीरे-धीरे मुझे मन्त्र सिद्ध होने लगे।”

“मैं सिद्ध हुआ, मगर मेरे भीतर अब भी एक आग थी – अपने पिता को देखने की। मैं वापस गया गंधर्वलोक ... और जब मेरी माँ ने मुझे देखा, तो वह कांप गईं।”

विक्रम ध्यान से सुन रहा था।

“मैंने अपने पिता को ललकारा ... एक युद्ध हुआ ... और उसी युद्ध में मैंने उन्हें पराजित कर उनके सिंहासन से गिरा दिया। मगर वही मेरा सबसे बड़ा अपराध बन गया।”

“मेरी माँ ने गुस्से में मुझे शाप दे दिया —
‘अब से जो भी इस सिंघासन पर बैठेगा ... तू उसका दास बनेगा।’
और उन्होंने वह सिंघासन छिपा दिया।

“तब से मैं बेताल हूँ...”

“मेरा नाम तब तक कोई नहीं जानता था। लोग मुझे □□□□□ □□ □□□□□ कहते थे। पर जब एक पुराना ऋषि मुझसे मिला, तो उसने कहा —
‘तू तो बेताल है ... जीवन और मृत्यु के बीच की शक्ति!’”

“तभी से मैं इस नाम से जाना गया।”

“तो यही था वह सिंघासन...”

विक्रम अब सब समझ चुका था।
"इसलिए योगिराज उस सिंघासन को पाना चाहता था … क्योंकि जो भी उस पर बैठेगा … वो तुम्हें अपना दास बना सकता है?"

बेताल ने सिर झुकाकर हामी भरी।

"और ये सिंघासन अब कहाँ है?"

बेताल बोला —
"किसी को नहीं पता … माँ ने उसे छिपा दिया … लेकिन उसने एक शर्त रखी थी — जब तक कोई व्यक्ति **32** गुणों का स्वामी नहीं होगा**,** वह सिंघासन प्रकट नहीं होगा।"

"32 गुण …?"

"हाँ … वे गुण — वीरता, दया, न्याय, बुद्धिमत्ता, आत्मसंयम, आदि… जो किसी भी राजा को सच्चा स्वामी बनाते हैं। वे 32 गुण … 32 पुतलियों में समाहित हैं … और वे पुतलियाँ धरती के अलग-अलग हिस्सों में छिपी हैं।"

विक्रम मौन हो गया।

बेताल ने उसकी ओर देखा —
"शायद तुम … वही हो राजा विक्रम … जो उन 32 गुणों के अधिकारी हो सकते हो…"

अध्याय 4: उज्जैनी की साजिशें – रानी चित्रलेखा, झुलिया काकी और गर्भित षड्यंत्र

उज्जैनी का राजमहल …
सूर्यास्त के समय सुनहरे रंगों से नहाया हुआ प्रतीत होता था। मगर महल की चमकती दीवारों के पीछे एक ऐसा अंधेरा छिपा था जो राजवंश के भविष्य को निगलने की तैयारी कर चुका था।

राजा भर्तहरी युद्धभूमि में, महल में अधूरा सिंहासन

राजा भर्तहरी, उज्जैनी के सबसे आदर्श राजा माने जाते थे। न्यायप्रिय, वीर और संयमी। मगर इन दिनों वे एक सीमावर्ती युद्ध में व्यस्त थे। उनकी अनुपस्थिति में महल का प्रशासन रानी चित्रलेखा के हाथों में था।

चित्रलेखा — सौंदर्य, विवेक और महत्वाकांक्षा का मिला-जुला स्वरूप। लेकिन जितनी खूबसूरत, उतनी ही जटिल। उसकी आत्मा में एक अधूरी प्यास थी — **"**मातृत्व**"** की।

उसकी एक निजी और रहस्यमयी दासी थी — झुलिया काकी, जो वर्षों से महल के भीतर रहते हुए अपनी गहरी जड़ों को फैला चुकी थी।

चित्रलेखा की बेचैनी और झुलिया का बीज बोना

"काकी, क्या तुम जानती हो… अगर मुझे पुत्र नहीं हुआ तो एक दिन कोई और रानी बनकर इस गद्दी पर बैठेगी…"
— चित्रलेखा ने तमतमाते हुए कहा।

झुलिया काकी अपने ठहरे हुए स्वर में बोली —
"राजमाता… पुत्र चाहिए तो केवल प्रार्थनाओं से नहीं मिलेगा। कुछ अलग करना होगा… पर क्या आप तैयार हैं… उस रस्ते पर चलने के लिए जहाँ वापसी नहीं होती?"

चित्रलेखा थोड़ी देर मौन रही… फिर सिर हिलाया।

विक्रम का आगमन और अस्वीकृति की चुभन

उधर युद्ध से पहले विक्रम उज्जैनी लौटे। राजमहल में उनका स्वागत औपचारिक था, मगर रानी चित्रलेखा की आंखों में तिरस्कार साफ़ झलक रहा था।

"भर्तहरी के लिए जान देने वाले बनते हो… लेकिन अपने ही कर्तव्य से मुँह मोड़ते हो! महल के भविष्य की कोई चिंता है तुम्हें?" — चित्रलेखा का स्वर कांटों से भरा था।

विक्रम चुप रहे। लेकिन बेताल, जो अदृश्य होकर साथ में मौजूद था, बोला —
"यह स्त्री सरल नहीं है विक्रम **…** यह किसी बड़े भ्रम का पात्र है। **"**

गुप्तचर का संदेश और विक्रम की उड़ान

उसी रात, विक्रम को महल के एक पुराने गुप्तचर से समाचार मिला —
"राजा भर्तहरी शत्रुओं की घेराबंदी में फँस चुके हैं। यदि कल सूर्योदय तक सहायता नहीं पहुँची तो… उनकी जान जा सकती है!"

बेताल यह सुनते ही गंभीर हो गया —
"मेरे पास एक उपाय है **…** मैं तुम्हें हवा की गति से वहां पहुँचा सकता हूँ **…"**

और पहली बार…
बेताल विक्रम को अपनी पीठ पर लेकर उड़ चला **…**

काले बादलों को चीरते हुए, तेज़ हवा को पार करते हुए…
और वहाँ पहुँचकर विक्रम ने भर्तहरी को बचाया… युद्ध में दुश्मनों को परास्त किया।

राजा भर्तहरी अपने छोटे भाई को गले लगाते हुए बोले —
"तुम्हारे बिना मेरा अंत निश्चित था। तुम केवल भाई नहीं **…** मेरे प्राण हो**,** विक्रम। **"**

चित्रलेखा की असुरक्षा और भय

भर्तहरी के लौटते ही चित्रलेखा ने देखा कि अब महल में हर कोई विक्रम की वीरता की चर्चा कर रहा है।

उसके भीतर एक अजीब -सी ईर्ष्या उभरने लगी।

"यह विक्रम … कहीं एक दिन मेरे पति की जगह न ले ले …?" — वह मन ही मन डरने लगी।

और ठीक उसी समय, झुलिया काकी ने उसका डर और गहरा कर दिया —
"राजमाता **…** क्या आपने महसूस नहीं किया कि विक्रम अकेला नहीं आया **…** उसके साथ कोई और है **…** कोई जिसे हम नहीं देख सकते **…** कोई जो भूत है **…** या कोई बड़ा रहस्य **?"**

झुलिया काकी की शंका और बेताल की प्रतिक्रिया

बेताल , जो यह सब देख रहा था , झुलिया काकी की उपस्थिति को महसूस कर चुका था। उसने कहा —
"विक्रम **,** यह स्त्री साधारण नहीं है। इसका अतीत गूढ़ है और इसके इरादे कपटपूर्ण। इसकी आत्मा पर किसी तांत्रिक का साया है। **"**

झुलिया काकी के सामने बेताल ने अदृश्य रहते हुए ऐसी घटनाएं घटाईं कि वह डर से कांपने लगी।

महल की दीवारों पर अचानक परछाइयाँ नाचने लगीं … दीपक अपने आप बुझने लगे … और झुलिया के कमरे में , एक रात अचानक दीवार पर लिखा मिला —
"मैं तुम्हें देख रहा हूँ **…"**

और फिर षड्यंत्र का अंकुरण **…**

रानी चित्रलेखा अब पूरी तरह झुलिया काकी के चंगुल में थी।

"राजमाता , यदि आपकी कोख संतान नहीं दे सकती … तो संतान को लाया जा सकता है … पर वह संतान दिव्य नहीं … तांत्रिक होनी चाहिए …"
— झुलिया ने एक रहस्यमयी आवाज़ में कहा।

चित्रलेखा चौंकी — "क्या मतलब ?"

"एक बालक है … विशेष बालक … जो आपको गद्दी दिलाएगा … राजा को मोहित करेगा … लेकिन … उसका पालन आपको रात के तीसरे प्रहर में करना होगा …"

चित्रलेखा, अब तक स्वयं के डर और सत्ता के मोह में उलझ चुकी थी — उसने हामी भर दी।

उसी रात ... महल में आया एक शैतानी बच्चा ...

नन्हे हाथ-पैर ... मगर आँखें ... बिल्कुल निर्जीव ... ठंडी ... और गहरी ...

वो रोता नहीं था। हँसता नहीं था। बस घूरता था ...

उसी क्षण, बेताल ने विक्रम से कहा —
"कोई बहुत बड़ा काला तूफान महल के अंदर आ चुका है, विक्रम ... और यह तूफान ... हमारी परीक्षा बनेगा।"

अध्याय 5: बेताल की पहली उड़ान – विक्रम बना भाई का रक्षक

रात्रि का तीसरा पहर ...

राजमहल के एक गुप्त कमरे में, विक्रम बेताल के साथ गहन मंत्रणा में बैठा था। एक घायल गुप्तचर, जिसकी साँसें अभी भी टूटी-टूटी थीं, हाँफते हुए बोला —

"राजकुमार ... हमारे महाराज ... शत्रु राज्य के बीचों-बीच फँस चुके हैं ... दसों दिशाओं से दुश्मनों ने उन्हें घेर लिया है ... यदि सुबह तक कोई नहीं पहुँचा ... तो ..."

विक्रम की आँखें दहक उठीं —
"भैया भर्तहरी!"

बेताल ने उसकी ओर देखा —
"अब तुम्हारा प्रेम तुम्हारी अग्निपरीक्षा लेने को खड़ा है, विक्रम। मैं तुम्हें वहाँ पहुँचा सकता हूँ ... मगर क्या तुम तैयार हो ... उड़ने के लिए ... मेरे साथ ... पहली बार?"

विक्रम ने बिना एक क्षण गंवाए कहा —
"उड़ चलो बेताल! मेरा भाई संकट में है ... और उसका जीवन मेरी साँसों से अधिक कीमती है।" आकाश मार्ग – पहली उड़ान का रहस्य

बेताल विक्रम के पीछे आ खड़ा हुआ, और अपने दोनों हाथ उसके कंधों पर रख दिए।

"अपनी आँखें बंद करो ... और मुझमें समा जाओ ... अपने भार को छोड़ो ... डर को त्यागो ... मैं अब तुम्हारा पंख हूँ ..."

क्षणभर में …
चारों ओर से काली धुंध उठी … और विक्रम और बेताल आकाश में ऊपर उठने लगे …

पृथ्वी नीचे सिमटती गई … तारे पास आते गए … और कुछ ही क्षणों में वे शत्रु सीमा की ओर उड़ रहे थे …

युद्धभूमि – मृत्यु की दस्तक और विक्रम का प्रवेश

नीचे … शत्रु सेनाओं ने उज्जैनी की सेना को चारों ओर से घेर लिया था।
भर्तहरी तलवार लेकर वीरता से लड़ रहे थे, मगर उनकी आँखों में थकावट और शरीर में रक्त बह रहा था।

“राजा भर्तहरी! अब कोई चमत्कार ही तुम्हें बचा सकता है!”
— दुश्मन सेनापति गरजा।

और ठीक उसी क्षण … आकाश से एक गर्जन हुआ …

“विक्रम!”

वह आकाश से तलवार लिए सीधे शत्रु सेना के बीच आ गिरा। उसकी उपस्थिति से ज़मीन काँप गई। दुश्मनों की आँखें चौंधिया गईं।

भर्तहरी हक्के-बक्के रह गए —
“विक्रम...? तू यहाँ...?”

“भैया, आपका जीवन मेरा कर्तव्य है। चलिए, अब यह युद्ध समाप्त करते हैं।”

विक्रम का संग्राम

विक्रम की तलवार बिजली की तरह चल रही थी। उसका हर वार किसी तूफान की तरह दुश्मनों को उड़ा रहा था। पीछे खड़े सैनिक विक्रम के शौर्य को देख जोश से भर गए।

भर्तहरी को एक ओर सुरक्षा में रखा गया, और विक्रम ने अकेले ही सेनापति को रणभूमि में परास्त कर दिया।

एक ही रात में युद्ध का रुख पलट गया।

शत्रु सेनाएं पीछे हट गईं।

भर्तहरी को सुरक्षित महल की ओर रवाना किया गया।

राजमहल में जयकार और द्वेष की शुरुआत

जब भर्तहरी को सुरक्षित लौटता देख चित्रलेखा ने राहत की साँस ली… लेकिन जैसे ही उसे पता चला कि उन्हें बचाने वाला फिर से विक्रम था — उसकी आँखों में जलन की लपट उठी।

"क्यों हर बार वही? क्यों हर बार विक्रम ही सबकी आँखों का तारा बन जाता है?"

झुलिया काकी उसकी पीठ पीछे खड़ी मुस्कुरा रही थी —
"राजमाता… असली युद्ध अब शुरू होगा…"

भाई का प्रेम और बेताल की मौन भूमिका

भर्तहरी ने राजसभा में विक्रम का स्वागत करते हुए कहा —
"मैं जीवित हूँ, केवल विक्रम के कारण। वह केवल मेरा छोटा भाई नहीं, मेरा अभिभावक है।"

सभा जयजयकार से गूंज उठी। मगर चित्रलेखा उस भीड़ में मौन बैठी थी… उसकी आँखों में कोई और ही योजना पल रही थी।

उधर, बेताल ने विक्रम से कहा —

"युद्ध अब तुम्हारे बाहर नहीं… महल की दीवारों के भीतर शुरू होगा, विक्रम। यह तुम्हारी अगली परीक्षा है…"

अध्याय 6: सिंहासन का रहस्य – जब विक्रम ने बेताल से पहली बार पूछा 'तुम कौन हो?'

राजमहल की छत पर चांदनी बिखरी हुई थी। दूर तक सब सो रहे थे, पर दो आत्माएं जाग रही थीं —
एक राजा, जो शांति चाहता था,
और एक पिशाच, जो राज खोलने से डरता था।

विक्रम ने उस रात बेताल को पास बैठाया और कहा —

"आज पहली बार मैं तुमसे एक प्रश्न पूछ रहा हूँ, बेताल… बताओ — तुम कौन हो? और तुम्हारा वह सिंहासन… उसका क्या रहस्य है?"

बेताल मौन हो गया।

उसकी आँखों में चमकते चांद का प्रतिबिम्ब काँपने लगा।

फिर उसने अपनी आंखें बंद कीं और बोला —

"मेरे जन्म से पहले ही मेरे भाग्य का पतन लिख दिया गया था…"

“मैं जन्मा नहीं था … और मेरे अस्तित्व पर पहले ही ताला डाल दिया गया था।

मेरे पिता — *□□□□□□□□□□ □□□□□□□□* — और मेरी माता — *□□□□□□□ □□□□□□□□*,
इन दोनों की प्रेमकथा देवलोक में प्रसिद्ध थी।
लेकिन एक श्राप … और सब बिखर गया।

एक योगिनी ने मेरे पिता को श्राप दिया —
‘तुम्हारा पुत्र ही तुम्हारी मृत्यु का कारण बनेगा।’

पिता डर गए … और माँ को त्याग दिया।

माँ ने मुझे छुपा लिया …
और मेरे जन्म होते ही मुझे एक शुष्क, उजाड़ कुएं में छोड़ दिया गया —
जहाँ मेरी परवरिश चमगादड़ों ने की।

हाँ … वही चमगादड़, जो आज भी मेरे आदेश से उड़ते हैं …”

वृक्ष, तांत्रिक और सिद्धियाँ

“मैं दिन में सोता था, रात में जागता।
किसी वृक्ष की टहनी पर उल्टा लटका हुआ … समय की प्रतीक्षा करता।

एक दिन …
कुछ तांत्रिक और ऋषि मेरे वृक्ष के नीचे तप करने आए।

मैंने उन्हें देखा … सुना … और सीखा।

धीरे-धीरे मुझे मंत्र सिद्धियाँ मिलने लगीं।
मैं दिव्य हो चला था, लेकिन अपूर्ण।”

पिता की हत्या और शापित सिंहासन

“जब मैं गंधर्वलोक पहुँचा, तो पिता को अपने सिंहासन पर देखा।
मेरे भीतर आक्रोश जला —
‘जिसने माँ को त्यागा, उसका सिंहासन क्यों सुरक्षित है?’

मैंने युद्ध किया।
उसे हराया।

उसे सिंहासन से गिराया।

लेकिन … जैसे ही वह सिंहासन भूमि पर गिरा …
मेरी माँ चीख उठीं —
‘तूने एक पिता को मारा! अब यह सिंहासन तुझे भी बाँध देगा!’

और उन्होंने मुझे शाप दे डाला —
‘अब से इस सिंहासन पर जो भी बैठेगा **…** तू उसका दास बन जाएगा।’

दिव्य सिंहासन और **32** गुणों का रहस्य

“पर माँ ने शाप के साथ एक उपाय भी जोड़ा …
यदि कोई व्यक्ति **32** दिव्य गुणों का स्वामी हो**,** तभी वह इस सिंहासन पर बैठने योग्य होगा।

ये 32 गुण 32 पुतलियों में छिपे हैं।

हर पुतली किसी एक गुण की प्रतीक है —
वीरता**,** बुद्धिमत्ता**,** त्याग**,** करुणा**,** निष्ठा**,** न्याय**,** वैराग्य **…**
और बाकी उन गुणों की जिनकी व्याख्या सिर्फ कर्म से होती है, वाणी से नहीं।”

सिंहासन अब कहाँ है **?**

विक्रम ने पूछा —
“और वह सिंहासन अब कहाँ है?”

बेताल बोला —
“माँ ने उसे छुपा दिया था … पृथ्वी में … किसी रहस्यमयी जगह। लेकिन वह तब तक प्रकट नहीं होगा जब तक कोई व्यक्ति इन 32 गुणों की पात्रता पूरी न कर ले।”

विक्रम गंभीर हो गया।

“और योगिराज …? वह उस सिंहासन को क्यों चाहता है?”

बेताल की आँखें जलीं —
“क्योंकि यदि वह सिंहासन योगिराज को मिल गया **…** तो मैं उसका दास बन जाऊँगा **…** और तब उज्जैनी ही नहीं**,** सम्पूर्ण आर्यावर्त अंधकार में डूब जाएगा।**”**

और तब**…**

विक्रम ने बेताल की आँखों में देखा।

“यदि मैं वह 32 गुणों वाला व्यक्ति बन जाऊँ … तब क्या तुम मेरे …?”

बेताल ने मुस्कराकर सिर झुका लिया —
“तब मैं तुम्हारा सेनापति**,** रक्षक**,** मित्र और छाया बनूँगा **—**
तब तू मेरा स्वामी नहीं **…**
बल्कि मैं तुझे *[illegible]* मानूंगा।**”**

विक्रम की शपथ

उसी रात … विक्रम ने आसमान की ओर देखा और प्रण लिया —
“मैं वह **32** गुणों वाला मनुष्य बनूँगा **…**
न केवल सिंहासन के लिए **…**
बल्कि उज्जैनी और धर्म की रक्षा के लिए। **”**

और कहीं दूर … पृथ्वी के भीतर …
वह शापित सिंहासन **…** एक हल्की कंपन के साथ **…** जाग उठा था।

अध्याय 7: चित्रलेखा का शैतानी पुत्र - नर - पिशाचिनी का भेजा वरदान या अभिशाप ?

महल में शांति का आभास था … परंतु हर दीवार के पीछे , हर छत के नीचे … एक अंधकार धीरे -धीरे आकार ले रहा था।

झुलिया काकी की चाल और चित्रलेखा की इच्छा

चित्रलेखा — अब विक्रम से पूरी तरह असुरक्षित महसूस करने लगी थी।
भर्तहरी का प्रेम , प्रजा का सम्मान , सभा का समर्थन —
सब विक्रम की ओर झुकने लगे थे।

रानी चित्रलेखा ने एक रात झुलिया काकी से कहा —

“यदि मेरे पास पुत्र होता **…** तो यह सब न होता। **”**

झुलिया काकी ने मंद स्वर में उत्तर दिया —

“पुत्र नहीं है **,** तो क्या हुआ **…** पुत्र ला सकते हैं। एक ऐसा पुत्र **…** जो देवताओं से भी शक्तिशाली होगा **…** मगर उसकी देखभाल रात के तीसरे पहर में करनी होगी **…** वह दिन के उजाले से दूर ही रहेगा। **”**

चित्रलेखा चौंकी — “कौन है वह ?”

काकी ने उत्तर नहीं दिया … बस एक मटमैले रेशमी कपड़े में लिपटा हुआ *□□□□ □□□□□* चित्रलेखा के सामने रख दिया।

बच्चे का आगमन - असामान्य शांति **,** गहरी नजरें

जब चित्रलेखा ने उस कपड़े को हटाया … तो सामने एक बच्चा था —
निशब्द **,** निस्तब्ध **,** निर्जीव नज़रों वाला।
उसकी आँखें काली नहीं … खाली थीं।

वह रोया नहीं। बस **…** देखता रहा।

चित्रलेखा को लगा —
“शायद यही मेरी ममता का उत्तर है …”

परन्तु, वह नहीं जानती थी —
यह बच्चा कोई सामान्य शिशु नहीं था।

पहली रात — जब महल में दीयों ने बुझना शुरू किया

बच्चे को महल के एक सुनसान कक्ष में रखा गया।

झुलिया काकी ने आदेश दिया —
“रात के तीसरे पहर इस कक्ष में एक बकरी का खून छिड़क देना … तब ही वह बच्चा शांत रहेगा।”

चित्रलेखा ने अंधविश्वास में वह सब किया … और बच्चा शांत रहा।

मगर जब एक रात ऐसा न किया गया …

दीये खुद-ब-खुद बुझने लगे …
महल की दीवारों से खून टपकने लगा …
और एक सेविका अजीब हालात में मृत पाई गई …

बेताल का डर और चेतावनी

बेताल ने विक्रम को चेताया —

“यह महल अब सुरक्षित नहीं रहा … यहाँ नर-पिशाचिनी की गंध है … और वह बालक… केवल मांस का भूखा नहीं … वह सिंहासन की ओर बढ़ता शैतान है।”

विक्रम चिंतित हुआ —
“क्या भैया को इस बारे में बताना उचित होगा?”

बेताल बोला —
“भर्तहरी अब उस बच्चे के सम्मोहन में आ चुके हैं … जब तक सम्मोहन टूटेगा नहीं, तब तक सत्य व्यर्थ है।”

बच्चे का प्रभाव और भर्तहरी का बदलाव

धीरे-धीरे, भर्तहरी उस बच्चे के प्रेम में डूबते जा रहे थे।
महल में सबको यही लगता कि वह बच्चा उनका ही पुत्र है।

पर विक्रम देख रहा था —
भर्तहरी अब सभा में ध्यान नहीं देते … रात्रि में विचलित रहते … और चित्रलेखा से और अधिक बंधते जा रहे हैं।

चित्रलेखा ने महसूस किया —
“यह बच्चा वास्तव में चमत्कारी है ...”

लेकिन हकीकत यह थी —
यह चमत्कार नहीं, एक शैतानी मंत्र था, जिसे नर-पिशाचिनी ने झुलिया काकी के ज़रिये इस बच्चे के माध्यम से महल में पहुँचाया था।

गुप्त संवाद – बेताल और चित्रलेखा का आमना-सामना

एक रात …
चित्रलेखा को ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई उसकी आत्मा में झाँक रहा हो।

तभी … उसके कमरे में अजीब-सी ठंडक फैली …
और दीवार पर एक परछाईं उभरने लगी।

“रानी चित्रलेखा ... तू माँ नहीं बनी ... तू पिशाचिनी की मोहरा बन चुकी है ...”

चित्रलेखा काँप उठी —
“क… कौन हो तुम?”

“मैं वही हूँ ... जिसे तू देख नहीं सकती ... लेकिन जिसने तुझे पहचान लिया है ... बेताल।”

झुलिया काकी दौड़ते हुए आई और बोली —
“राजमाता, यह सब भ्रम है ... बेताल एक छलावा है ... आप केवल अपने पुत्र पर ध्यान दीजिए ...”

चित्रलेखा फिर से झूलने लगी …
ममता और सत्ता के बीच।

और तब... उज्जैनी का भाग्य करवट लेता है

महल में धीरे-धीरे रहस्यमयी मौतें बढ़ने लगीं …
कुछ सैनिक अर्धरात्रि में गायब हो जाते …
कुछ दासियाँ पागल हो जातीं …

और विक्रम को यह स्पष्ट दिखने लगा —

“यह बच्चा अब एक शैतानी सत्ता बन चुका है ... और यह उज्जैनी का काल बन सकता है।”

अध्याय 8: बेताल की खोज – “मेरी माँ अब नहीं रही ...”

गहन रात्रि का समय था। महल की सबसे ऊँची मीनार पर विक्रम अकेले बैठा था। पास ही खड़ा बेताल, इस बार गंभीर था। उसकी आँखों में एक ऐसी बेचैनी थी जिसे विक्रम ने पहले कभी नहीं देखा था।

विक्रम ने पूछा —

“क्या हुआ बेताल? आज तुम मौन क्यों हो?”

बेताल ने धीमे स्वर में उत्तर दिया —

“विक्रम... मैं वर्षों से इस उज्जैनी में तुम्हारे साथ रहा...
तुमने मेरा साथ दिया... मेरी रक्षा की...
पर मैंने कभी अपनी माँ के लिए कुछ नहीं किया।
मैं जानना चाहता हूँ — वह अब कहाँ है? क्या जीवित है? क्या मुझे याद करती है...?”

माँ की खोज की शुरुआत

विक्रम ने बिना समय गंवाए कहा —

“चलो बेताल... हम तुम्हारी माँ को खोजेंगे। इस भूमि पर ऐसा कोई दुःख नहीं जिसे मिलकर नहीं सुलझाया जा सके।”

बेताल की आँखें भर आईं —
“ध्यान रखना विक्रम... मैं एक पिशाच हूँ... पर मेरी पीड़ा भी उतनी ही असली है जितनी एक इंसान की माँ के बिना होती है।”

और उसी रात… विक्रम और बेताल अपनी सबसे कठिन खोज पर निकल पड़े — माँ की खोज।

वेदना की यात्रा – जब अतीत जीवित हो उठा

वे दोनों सबसे पहले पहुँचे उस सूखे कुएं के पास जहाँ कभी बेताल को बचपन में फेंका गया था।

कुएं के पत्थरों पर आज भी नाखूनों के निशान, छोटी हड्डियाँ और ध्यान की कालिमा बसी हुई थी।

बेताल वहीं बैठ गया… और आँखें मूँद लीं।

“माँ... क्या तुम कभी मेरे लिए लौटोगी?”

हवा एक पल के लिए रुकी…
और बेताल को एक अजीब-सी सिसकी सुनाई दी — “बेताल...”

वह दौड़ा … विक्रम पीछे-पीछे …
लेकिन जब वह पहुँचा, वहाँ बस एक जली हुई चुनरी थी — जिसकी किनारी पर *□□□□□□ □□□ □□ □□□□□* बने थे।

सच्चाई का रहस्य – नर पिशाचिनी का कुकर्म

उसी क्षण एक ज्योतिषी साधक मिला जो वर्षों से साधना में लीन था।

उसने विक्रम को बताया —

“कुछ वर्षों पहले एक काली छाया इस भूमि पर आई थी **…**
उसने एक स्त्री को मारा था **…**
उसका नाम मीनावती था **…** गंधर्वराज की पत्नी। **”**

बेताल की आँखों में लपटें उठने लगीं —

“नर पिशाचिनी ने मेरी माँ को मार दिया **…** सिर्फ मेरे सिंहासन के रहस्य के लिए **…”**

वह वहीं भूमि पर घुटनों के बल बैठ गया …
उसकी आँखों से आंसू नहीं, काले धुएँ की बूंदें गिर रही थीं।

माँ की राख और बेटे की पीड़ा

बेताल को वह स्थान दिखाया गया जहाँ उसकी माँ की अस्थियाँ अब भी एक वृक्ष के नीचे गुप्त रूप से रखी थीं।

बेताल ने उन्हें अपनी गोदी में उठाया, और एक सूनी मुस्कान के साथ कहा —

“माँ **…** मुझे क्षमा करना **…** मैं तुझे बचा नहीं सका **…**
पर वचन देता हूँ **…** तेरा अपमान करने वाली नर पिशाचिनी को इस धरती पर अब चैन से न जीने दूँगा। **”**

नर-पिशाचिनी का भय और बेताल का संकल्प

उस रात … नर-पिशाचिनी के काले गढ़ में हलचल मच गई।

एक अंधेरी छाया, जो कभी काँपती नहीं थी, आज पहली बार थरथरा उठी।

“बेताल को सब याद आ गया है **…** अब वो सिंघासन की ओर बढ़ेगा **…”**

बेताल का निर्णय

बेताल विक्रम से बोला —

“अब मैं नहीं रुकूंगा।
अब यह केवल तुम्हारा यज्ञ नहीं , मेरी माँ की आत्मा का भी यज्ञ है।
नर पिशाचिनी को हराने के लिए हमें उस सिंहासन को जगाना ही होगा —
और उसके लिए चाहिए ... **32** पुतलियाँ ... **32** गुण। ”

विक्रम बोला —
“मैं तैयार हूँ बेताल। चलो , धर्म की इस खोज में एक और अध्याय जोड़ते हैं। ”

अध्याय **9: 32** पुतलियों की खोज - विक्रम की पहली यात्रा और प्रथम गुण ‘वीरता ’ का रहस्य

उज्जैनी में रात थी , परन्तु राजा विक्रम की आंखों में नया सूर्य उग आया था।

बेताल ने कहा —

“राजा , अब समय है उस यात्रा पर निकलने का
जहाँ तुम्हें वे **32** पुतलियाँ ढूँढनी हैं ,
जिनमें हर एक पुतली
एक गुप्त गुण की अधिष्ठात्री है।
जिस क्षण **32** गुण तुम्हारे भीतर होंगे ,
उस क्षण वह सिंहासन तुम्हारा हो जाएगा। ”

विक्रम ने बेताल से पूछा —
“क्या मुझे यह यात्रा अकेले करनी होगी **?**”

बेताल बोला —
“शरीर से हाँ ... पर छाया बनकर मैं तुम्हारे साथ रहूंगा।
पर ध्यान रहे — हर गुण की प्राप्ति एक जीवित परीक्षा होगी।
तुम्हें किसी को हराकर नहीं ... किसी को बचाकर ... खुद को सिद्ध करना होगा। ”

पहला पड़ाव — वनगंगा की दिशा

विक्रम ने उज्जैनी से बाहर कदम रखा।
पीछे महल के द्वार धीरे -धीरे बंद हो गए।
रात्रि के अंधेरे में बेताल की छाया साथ चल रही थी।

उनकी पहली यात्रा *□□□□□□ □□□□* में स्थित वनगंगा वन की ओर थी —
जहाँ कहा जाता था कि एक बर्बर जाति का आतंक फैला हुआ है।

वहाँ एक वृद्ध साधु ने कई दिनों से तपस्या में लीन होने का प्रयास किया था ,
परंतु वह जाति हर तीसरे दिन किसी इंसान को बलि चढ़ा देती थी।

बेताल बोला —

“यहाँ तुम्हारा पहला गुण छुपा है — *‘□□□□□’□*
पर यह वीरता युद्ध में नहीं,
□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ में सिद्ध होगी।”

बलि की रात – राजा का वेश त्याग

विक्रम ने एक गुप्त साधु के वेश में स्वयं को बलि के लिए प्रस्तुत कर दिया।

जब बर्बर जाति के तांत्रिक ने उसे बलिपीठ पर लाया,
तब विक्रम ने आँखें बंद कीं और कहा —
“यदि मेरी मृत्यु से किसी निर्दोष की जान बच सकती है, तो यह जीवन सस्ता है।”

तभी… बिजली कड़कती है…
आकाश में ध्वनि गूंजती है —
“वीरता किसी से छीनने में नहीं, देने में है!”

अचानक बलिपीठ की शिला फटती है…
और उसमें से एक छोटी संगमरमर की पुतली बाहर आती है।
उसके हाथ में एक तलवार है और आँखों में आँसू।

वह पुतली अपने आप विक्रम की हथेली में आ गिरती है।

बेताल बोला —
“तुमने पहला गुण अर्जित कर लिया है, विक्रम — *□□□□□*।”
“अब **31** बाकी हैं…”

बर्बर जाति की मुक्ति और साधु का आशीर्वाद

विक्रम की निःस्वार्थता से प्रभावित होकर
वह जाति शांति की ओर लौटती है।
वह वृद्ध साधु बाहर आता है और विक्रम से कहता है —

“जिस राजा के भीतर यह बल है कि वह बिना प्रसिद्धि के किसी को बचा सके —
उसके चरणों में यह पृथ्वी नतमस्तक होगी।”

रात्रि विश्राम – बेताल और विक्रम का संवाद

रात्रि में चंद्रमा के नीचे बेताल और विक्रम बैठते हैं।

विक्रम पूछता है —

“क्या हर गुण इसी तरह की परीक्षा के बाद मिलेगा?”

बेताल बोला —
“हाँ। लेकिन अगली बार युद्ध सिर्फ बाहरी नहीं होगा **...** वह *□□□□* से होगा। **”**
“क्योंकि अगला गुण है **—** *□□□□□□□□□□□*। **”**

अध्याय **10:** सत्य की तलवार **-** प्रियजन के विरुद्ध खड़ा होना

वनगंगा की परीक्षा पास करने के बाद
विक्रम और बेताल उत्तर दिशा की ओर बढ़ते हैं,
जहाँ उन्हें दूसरा गुण प्राप्त करना है —
सत्यप्रियता **(Truthfulness).**

बेताल ने चलते हुए कहा —

“राजन **,** सत्य का मूल्य तब नहीं समझ आता
जब वह आसान हो **,**
बल्कि तब जब वह तुम्हारे अपने लोगों को तोड़ देता है। **”**

सत्यपुर **-** जहाँ झूठ ने कानून का रूप ले लिया

विक्रम जिस नगर में पहुँचा, उसका नाम था सत्यपुर,
पर यहाँ सब कुछ सत्य के नाम पर झूठ से लिपटा था।

नगर का राजा राजा धरमानंद था —
जो न्याय के नाम पर अपने विरोधियों को फाँसी दे देता,
और खुद को ‘सत्य का अवतार’ कहता।

नगर के बाहर एक स्त्री — *□□□□□□□* —
चीख-चीखकर कह रही थी :

“मुझे न्याय दो **...** मेरे पति निर्दोष थे **...**
लेकिन राजा ने उन्हें झूठे मुकदमे में फाँसी दे दी **!”**

विक्रम का द्वंद्व **-** जब सामने आया पुराना मित्र

विक्रम ने नगर के न्याय सभा में प्रवेश किया,
जहाँ उसे आश्चर्य हुआ —

राजा धरमानंद कोई और नहीं **,**
बल्कि उसका पुराना मित्र और युद्धसाथी *□□□□□□□□□ □□□□□□* था।

विक्रम ने पूछा —

“सुहेल ! तुम यहाँ ? ये क्या हाल बना लिया है तुमने ?”

सुहेल ने मुस्कराते हुए कहा —

“मित्र ! अब मैं सत्य का प्रतिनिधि हूँ।
यह नगर तभी शांत रहेगा जब लोग डरेंगे …
झूठ बोलने से नहीं , [illegible]!”

विक्रम स्तब्ध रह गया।

सत्य की आग – जब विक्रम को झूठे न्याय के विरुद्ध बोलना पड़ा

अहल्या को अगले दिन फाँसी दी जानी थी।
उसका अपराध ? — राजा पर प्रश्न उठाना।

विक्रम को बुलाया गया अंतिम साक्षी बनने के लिए।

विक्रम के सामने रखा गया शपथपत्र ,
जिस पर हस्ताक्षर करने पर वह झूठे नियमों के अनुसार अहल्या को अपराधिनी घोषित करता।

बेताल बोला —

“विक्रम … तुम्हारे एक हस्ताक्षर से यह स्त्री मारी जाएगी …
लेकिन अगर तुम सच बोलते हो ,
तो तुम्हारा मित्र राजा सुहेल तुम्हें दुश्मन घोषित करेगा। ”

विक्रम ने उस पत्र को हाथ में लिया …
सभा मौन थी …
और तब विक्रम ने ऊँचे स्वर में कहा —

“मैं झूठे सत्य की गवाही नहीं दूँगा।
जिस नगर में सत्य राजाओं की तलवार बन जाए ,
वहाँ जनता की गर्दनें नहीं बचतीं। ”

दो मित्रों की टकराहट – पराजित हुआ झूठ

राजा सुहेल ने विक्रम को कैद करने का आदेश दिया।
परंतु तभी नगर के सैनिक , जो वर्षों से राजा के आतंक से थक चुके थे ,
विक्रम के समर्थन में खड़े हो गए।

अहल्या मुक्त हुई ,
राजा धरमानंद को त्यागपत्र देना पड़ा।

विक्रम ने नगर को एक जनसभा न्याय-व्यवस्था दी।

दूसरी पुतली – जो सत्य का भार उठाती थी

सभा के अंत में, न्याय भवन की दीवार चटकती है —
और वहाँ से एक चमकती दूसरी पुतली निकलती है।

वह पुतली आँखों पर पट्टी बाँधे थी,
हाथ में तराजू था... और उसका नाम था — *“□□□□□□□”*

बेताल बोला —

“यह दूसरी पुतली तुम्हारी परीक्षा से प्रसन्न होकर तुम्हारे साथ चली आई है।
अब तुम सत्यप्रियता के गुण से युक्त हो चुके हो, राजा विक्रम।”

रात्रि विश्राम – जब विक्रम बोला: “सत्य की राह अकेली होती है”

बेताल मुस्कराया —

“हाँ, विक्रम।
लेकिन जो उसे अकेले चल पाता है,
वही उस सिंहासन का योग्य स्वामी होता है।”

अध्याय 11: करुणा की परीक्षा – जब विक्रम को अपने सबसे बड़े शत्रु को क्षमा करना पड़ा

राजा विक्रम अब दो गुणों —
वीरता और सत्यप्रियता — से युक्त हो चुके थे।

अब अगला पड़ाव था उत्तर-पश्चिम की ओर स्थित व्यासगिरि —
जहाँ एक पुराना यज्ञस्थल अब क्रूरता और बदले की अग्नि में जल रहा था।

बेताल ने चलते हुए कहा —

“विक्रम, यह अगला गुण तुम्हारे तलवार चलाने के कौशल की नहीं,
बल्कि तलवार रोक लेने की क्षमता की परीक्षा लेगा।”

व्यासगिरि की श्मशानगाथा – शत्रु की पुकार

विक्रम और बेताल जैसे ही व्यासगिरि पहुँचे,
उन्हें दूर से किसी की कराहती हुई आवाज़ सुनाई दी।

“राजा विक्रम ... क्षमा करो ... मेरी भूल थी ...”

विक्रम के पाँव ठिठक गए।
उस आवाज़ को वह पहचानते थे।

यह कोई और नहीं …
बल्कि *□□□□ □□□□□□* की आवाज़ थी —
वही अरिंदम जिसने वर्षों पूर्व उज्जैनी पर हमला किया था,
और विक्रम के पिता की मृत्यु का ज़िम्मेदार था।

शत्रु का अंत नहीं ... एक निवेदन

अरिंदम अब एक टूटी हुई खोपड़ी,
कटे हुए पाँव और जलते ज्वर से घिरा
एक पश्चातापी मानव बन चुका था।

उसने विक्रम को देखा और कहा —

“मैंने उज्जैनी को लूटा था ...
पर अब मेरा अपना राज्य भी लुट चुका है ...
मेरे बेटे मुझे जहर देकर महल से निकाल चुके हैं ...
और अब यह जंगल ही मेरी चिता है ...”

विक्रम का चेहरा सख्त हो गया —
“तो अब दया की उम्मीद है?”

बेताल का द्वंद्व – ‘क्या अब भी दया करोगे?’

बेताल ने हल्की हँसी में कहा —

“विक्रम, क्या यह वह दिन है जब तू अपने पिता की हत्या करने वाले को जल के लिए एक पात्र देगा?”

विक्रम ने कोई उत्तर नहीं दिया।

उसने झरने से पानी लाया,
अपने वस्त्र से अरिंदम की घावों की सफाई की,
और उसे एक वृक्ष के नीचे बैठाया।

अरिंदम की आँखों से आँसू बहने लगे।

“क्या तुम मुझे माफ करोगे, विक्रम?”

विक्रम ने उसकी आँखों में देखा और कहा —

“मैं तुम्हें नहीं माफ कर रहा...
मैं उस घृणा को माफ कर रहा हूँ
जो मेरे भीतर वर्षों से मेरे ही रक्त को जलाती रही।”

तीसरी पुतली – करुणा की देवी प्रकट होती है

जैसे ही विक्रम ने अरिंदम को सहारा दिया,
अचानक एक सूखी भूमि से
कमल का फूल उग आया।

कमल के मध्य से एक स्त्री आकृति प्रकट हुई —
सफेद वस्त्रों में, कोमल मुस्कान लिए, हाथ में जल पात्र।

वह बोली —

“मैं हूँ करुणा...
तुमने जिस क्षमा को निभाया है,
वह साधारण नहीं...
एक राजा का सबसे बड़ा बल है उसका सहृदय होना।
तुम तीसरी पुतली के अधिकारी बन चुके हो।”

वह स्त्री पुतली का रूप लेकर
विक्रम की हथेली में समा जाती है।

रात्रि का संवाद – जब बेताल भी मौन हो गया

विक्रम चुपचाप अग्नि के पास बैठा था।
बेताल उसके पास आया... पर कुछ नहीं बोला।

विक्रम ने देखा —
बेताल की आँखें नम थीं।

“तुम रो रहे हो?”

बेताल मुस्कराया —
“नहीं, विक्रम... मैं बस यह सोच रहा हूँ —
जो पिशाच तंत्रियों के भय से काँपते थे,
आज वे तेरी करुणा के आगे नतमस्तक हो रहे हैं...”

अध्याय 12: बुद्धिमत्ता की बंधी हुई गांठ – जब विक्रम को एक असंभव पहेली सुलझानी पड़ी

विक्रम के पास अब तीन पुतलियाँ थीं —
वीरता, सत्यप्रियता और करुणा।

अब वह अगली परीक्षा के लिए पूर्व दिशा में स्थित
‘माया -सरस्वती वन ’ की ओर बढ़ रहा था।

बेताल बोला —

“राजन , अब तुम्हारी अगली परीक्षा
ना तलवार मांगेगी ,
ना त्याग ...
बल्कि मांगेगी — *□□□□, □□□□□ □□ □□□□□□□”*

माया -सरस्वती वन – जहाँ पेड़ भी प्रश्न पूछते हैं

जैसे ही विक्रम और बेताल उस वन में प्रवेश करते हैं ,
चारों ओर एक विचित्र *□□□□ □□□□* फैल जाता है।
हर वृक्ष , हर पत्ता , हर छाया … कुछ कहती प्रतीत होती है।

तभी अचानक एक वृद्धा प्रकट होती है —
कांपती आवाज़ में बोलती है :

“राजा विक्रम ,
यदि तुम इस वन से बाहर निकलना चाहते हो ,
तो पहले मेरी *□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□* को हल करो। ”

पहेली – तीन शर्तें , एक उत्तर

वृद्धा बोली :

“पहला संकेत —
मैं हूँ जो आँखों से नहीं दिखता
पर सब कुछ नियंत्रित करता हूँ।

दूसरा संकेत —
मैं जितना बांटा जाऊँ , उतना बढ़ता हूँ ,
लेकिन जैसे ही कोई मुझसे मोह करे , मैं घटने लगता हूँ।

तीसरा संकेत —
मेरे होने से राजा की जय होती है ,
पर मेरे खोते ही राजपाठ मिट्टी हो जाता है। ”

वृद्धा मुस्कराई और बोली —

“उत्तर क्या है **?”**

विक्रम का मनोमंथन

विक्रम ने आंखें बंद कीं …
चारों ओर नीला धुंध घना हो चुका था …

बेताल फुसफुसाया —
“ध्यान रखना **…** यह माया का वन है **…**
जो जवाब गलत देगा **,** वह इसी धुंध में खो जाएगा **…”**

विक्रम ने पहला संकेत पर ध्यान दिया —
जो दिखता नहीं पर सब कुछ नियंत्रित करता है **…**

दूसरा —
जितना बाँटो **,** उतना बढ़े **…**

तीसरा —
राजा की जय उसमें है **…**

उत्तर **– “**बुद्धि **”**

विक्रम ने अपनी तलवार ज़मीन में गाड़ दी और वृद्धा से कहा —

“उत्तर है **—** *□□□□□□*। **”**

वृद्धा चुप …

फिर उसकी झुर्रियाँ खिंच गईं …
चेहरा चमक उठा …
और वह बोली —

“राजा विक्रम **,** तुमने सही उत्तर दिया है।
बुद्धि ही वह शक्ति है जो अदृश्य होकर भी
राज्य **,** धर्म और जीवन का संचालन करती है। **”**

चौथी पुतली **–** गुप्तगांठा

अचानक वृद्धा के स्थान पर एक पुतली प्रकट होती है —
जिसके माथे पर *□□□□□ □□□□* अंकित था
और जो एक छोटी पुस्तक और दीपक पकड़े हुए थी।

बेताल बोला —

“यह है चौथी पुतली **—** *□□□□□□□□□□*,
जो *□□□□□□□□□□□* की अधिष्ठात्री है। **”**

रात्रि विश्राम **–** जब बेताल ने विक्रम से पूछा एक व्यक्तिगत प्रश्न

बेताल ने पूछा —

“राजन, तुम्हें शक्ति और सत्य चाहिए, समझा जा सकता है...
करुणा भी आवश्यक है...
लेकिन बुद्धि — क्या यह राजा के लिए सबसे ज़रूरी गुण है?”

विक्रम बोला —

“हाँ, बेताल।
क्योंकि बिना बुद्धि के
सत्य कट्टरता बन जाता है,
करुणा दुर्बलता...
और वीरता — अहंकार।”

बेताल कुछ देर तक मौन रहा।
फिर बोला —

“राजा विक्रम, अब तुम और भी योग्य हो रहे हो...
लेकिन अगली परीक्षा में,
तुम्हें ‘क्षमा’ से आगे जाकर
□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ करना होगा...”

अध्याय 13: आत्मसंयम की अग्निपरीक्षा – जब विक्रम को अपमान के बाद भी शांत रहना पड़ा

चौथी पुतली *□□□□□□□□□□* के साथ
विक्रम और बेताल अब पश्चिम की ओर बढ़ते हैं,
जहाँ उन्हें अगली परीक्षा देनी है —
आत्मसंयम (Self-Restraint)।

बेताल ने कहा —

“राजन, इस बार तुम्हें कोई युद्ध नहीं करना,
बल्कि उस युद्ध को सहना है
जो भीतर उठेगा —
तुम्हारे आत्मसम्मान और धैर्य के बीच।”

तिरोह वन का अपमान पर्व

तिरोह वन एक शांत जगह थी —
जहाँ ऋषियों की सभा चल रही थी।

पर वहाँ एक नवयुवक राजकुमार — *□□□□□□□* —
स्वयं को सबसे बड़ा ज्ञानी मानता था

और सभा में आए किसी भी अतिथि का अपमान करना
उसका अभिमान बन चुका था।

विक्रम जैसे ही वहाँ पहुँचे,
शंखदत्त व्यंग्य में बोला —

“देखो! एक और ढोंगी तपस्वी
जो अपने यश की भूख में घूमता है...
राजा कहलाने की चाहत है, पर साधु का वेश पहनता है!”

सभा हँसी से गूंज उठी।
विक्रम की आँखें सुर्ख हो गईं...
पर उसने कुछ नहीं कहा।

बेताल की फुसफुसाहट – “अब तलवार क्यों नहीं उठाते?”

बेताल ने धीरे से कहा —

“राजन, यह वह अपमान है
जो तुम्हारी रगों में आग लगा सकता है...
क्या अब भी तुम शांत रहोगे?”

विक्रम ने गहरी साँस ली,
अपने वस्त्र को समेटा, और चुपचाप आगे बढ़ गया।

रात्रि में रहस्य प्रकट होता है

रात को एक वृद्ध ऋषि विक्रम के पास आए और बोले —

“राजन, शंखदत्त उसी राजा का पुत्र है
जिसने कभी तुम्हारे पितामह को राजसभा से अपमानित करके निकाला था।
आज यह भाग्यचक्र है —
यदि तुम चाहो, तो उसे उसका घमंड तोड़ सकते हो...”

विक्रम ने मुस्कराकर कहा —

“जो अपमान वर्षों पहले किया गया,
उसे दोहराकर मिटाया नहीं जा सकता...
उसे आत्मसंयम से समाप्त किया जा सकता है।”

पंचम पुतली – संयमता की देवी का प्रकट होना

अगली सुबह , सभा में विक्रम ने सभी ऋषियों को प्रणाम किया
और कहा —

“यदि मेरा मौन
किसी के अभिमान को शांत कर सके ,
तो वह मौन एक शंखनाद से भी श्रेष्ठ है। ”

तभी सभा के मध्य में एक प्रकाश फूटा …
और उसमें से एक स्वर्णमयी पुतली प्रकट हुई —
जिसकी आँखें बंद थीं और हाथों में रुद्राक्ष माला थी।

बेताल बोला —

“यह है [illegible],
जो अब तुम्हारा पाँचवाँ गुण बन चुकी है। ”

रात्रि विश्राम – जब बेताल ने कहा : ‘राजा बनना सरल है … संयमी राजा बनना दुर्लभ ’

बेताल ने धीमे स्वर में कहा —

“आज तुमने वो किया जो कई राजा नहीं कर सके —
अपमान झेलकर भी मौन रहना।
तुम अब आधे मार्ग पर हो , विक्रम। ”

विक्रम बोला —

“राजा वही नहीं जो रण में विजयी हो …
राजा वह है जो क्रोध पर ,
अपने भीतर के तूफ़ान पर भी
विजय प्राप्त कर सके। ”

अध्याय 14: दानशीलता की शिला – जब विक्रम को अजनबी के लिए त्यागना पड़ा अपना सबसे प्रिय धन

पाँच पुतलियाँ प्राप्त कर चुके विक्रम और बेताल
अब बढ़ते हैं दक्षिण की ओर —
एक विशाल मैदान की ओर जहाँ एक प्राचीन ध्वंस मंदिर है।

बेताल ने कहा —

“अब समय है *□□□□□□□□* की परीक्षा का **...**
राजन **,** यह वह गुण है
जो किसी राज्य की सीमाओं से परे होता है **—**
यह राजा की आत्मा को नापता है। **”**

चन्द्राश्म मंदिर – जहाँ माँगते हैं वो , जो लौटाते नहीं

विक्रम और बेताल जैसे ही मंदिर में पहुँचे ,
एक वृद्ध ब्राह्मण वहाँ बैठा मिला
जिसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

विक्रम ने पूछा —

“महाराज **,** क्या कष्ट है आपको **?”**

ब्राह्मण बोला —

“मेरी बेटी की शादी है **...**
पर मेरे पास कुछ भी नहीं **...**
मेरे कुल की मर्यादा **,** मेरी इज़्ज़त **,** सब दाँव पर है।
मुझे बस एक चीज़ चाहिए **—**
वह *□□□□□□□□-□□□□***,** जो तुम्हारे मुकुट में जड़ा है **...**
वही रत्न जो केवल उज्जैनी के सम्राट के सिर पर होता है। **”**

कृत्तिका -रत्न – उज्जैनी का शौर्य चिह्न

बेताल चौंक उठा —

“राजन **!** यह रत्न सिर्फ तुम्हारे राज्य की पहचान नहीं **,**
तुम्हारे सिंहासन का अधिकार चिह्न भी है **...**
इसे देना मतलब अपना राज्य सौंपना होगा। **”**

विक्रम कुछ देर तक शांत रहा।

फिर उसने वह रत्न अपने मुकुट से निकाला …
और वृद्ध ब्राह्मण को सौंपते हुए कहा —

“यदि मेरे राज्य का गौरव
किसी कन्या के आँसुओं से बड़ा हो जाए **,**
तो मुझे ऐसे गौरव का त्याग करना स्वीकार है। **”**

ब्राह्मण स्तब्ध रह गया।

छठी पुतली – दायिनी प्रकट होती है

जैसे ही वृद्ध ने रत्न स्वीकार किया ,
वह धीरे -धीरे एक *[illegible] [illegible]* में बदल गया।

पुतली के हाथों में *[illegible] [illegible]* था ,
जिससे *[illegible] [illegible]* बह रहा था।

बेताल ने सिर झुकाया और बोला —

“यह है छठी पुतली **—** *[illegible]*,
जो दानशीलता की साक्षात मूर्ति है। **”**

पुतली विक्रम की हथेली में समा गई।

रात्रि विश्राम **–** जब बेताल ने पूछा **:** ‘राजन **,** अब तुम्हारे पास राज्य का चिह्न नहीं **...** क्या तुम अब भी राजा हो **?’**

विक्रम ने मुस्कराकर उत्तर दिया —

“राजा वह नहीं **,** जो रत्न धारण करे **...**
राजा वह है **,**
जिसके त्याग से किसी के जीवन में रौशनी लौट आए। **”**

बेताल ने कुछ देर चुप रहकर कहा —

“[illegible]… [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]”

अध्याय **15:** न्याय का पलड़ा **–** जब विक्रम को दो निर्दोषों में से एक को दोषी ठहराना पड़ा

छः पुतलियाँ अब विक्रम की आत्मा का हिस्सा बन चुकी थीं।
बेताल के साथ उनकी यात्रा अब एक ऊँचाई पर पहुँच रही थी ,
पर इस बार की परीक्षा विक्रम के भीतर के न्यायबोध को झकझोरने वाली थी।

बेताल बोला —

“राजन **,** अब तुम्हारी परीक्षा वहाँ होगी
जहाँ कोई ग्रंथ या नीति काम नहीं आएगी।
यह निर्णय तुम्हें अपने अंतःकरण से लेना होगा **...**
और उस निर्णय की पीड़ा भी तुम्हें ही सहनी होगी। **”**

धर्मवाटिका ग्राम **–** जहाँ दो सगे भाइयों पर एक ही हत्या का आरोप है

विक्रम और बेताल एक छोटे गाँव में पहुँचे
जहाँ सैकड़ों लोग इकट्ठा थे,
और दो युवक — □□□□□□□ और □□□□□□□ —
एक पेड़ से बंधे खड़े थे।

ग्राम प्रधान बोला —

“राजन, यह दोनों भाई हमारे गाँव के रक्षक रहे हैं।
पर आज इन पर आरोप है कि इन्होंने
हमारे आचार्य देवदत्त की हत्या की है।”

विक्रम ने पूछा —

“क्या कोई साक्षी है?”

सब मौन…

फिर एक वृद्धा बोली —

“मैंने एक युवक को भागते देखा था…
पर चेहरा स्पष्ट नहीं दिखा…
केवल इतना जानती हूँ कि उसके पाँव में नीले धागे बंधे थे।”

विक्रम दोनों भाइयों की ओर मुड़ा —
एक के पाँव में नीला धागा था…
दूसरे के पास आचार्य की अंगूठी मिली थी।

न्याय की वह घड़ी – जब दोनों निर्दोष लगे, पर अपराधी कोई एक था

बेताल फुसफुसाया —

“क्या करोगे विक्रम?
अगर तुम दोनों को छोड़ दोगे,
तो न्याय नहीं होगा…
और अगर किसी एक को दंड दोगे,
तो शायद निर्दोष को मृत्यु मिलेगी…”

विक्रम ने कुछ देर आँखें मूँदीं,
फिर बोला —

“मुझे दोनों से बात करनी है — अकेले में।”

भीतर की बात – जब न्याय अंतःकरण से निकलता है

विक्रम दोनों भाइयों को अलग-अलग कक्ष में ले गया।
वहाँ उसने कोई प्रश्न नहीं किया,
बस कहा —

“मैं जानता हूँ तुम निर्दोष हो...
तुम्हारा भाई अपराधी है...
अगर तुम चाहो तो उसे बचा सकते हो।”

दूसरे भाई से भी वही बात दोहराई।

अगली सुबह, दोनों भाइयों ने एक-दूसरे को बचाने की बात की।

विक्रम ने सभा के समक्ष कहा —

“यह न्याय नहीं कि हम किसी निर्दोष को दंड दें...
यह न्याय भी नहीं कि हम अपराधी को छोड़ दें...
पर जब दोनों एक-दूसरे के लिए अपने प्राण देने को तैयार हों —
तो दोष, *□□□□* का नहीं, *□□□□□□□□□* का है।”

विक्रम का निर्णय – दंड नहीं, तपस्वी अवसर

विक्रम ने कहा —

“इन दोनों को मैं मृत्यु दंड नहीं दूँगा...
बल्कि उज्जैनी के राजमहल में
इन्हें धर्म और नीति की शिक्षा मिलेगी।
वे दोनों भविष्य में न्याय के सहायक बनेंगे।”

सभा मौन थी...
फिर एक बुज़ुर्ग ऋषि सामने आया —
और उसकी देह से प्रकाश फूटा।

सातवीं पुतली – ‘न्यायगामिनी’ प्रकट होती है

वह ऋषि अब पुतली में बदल चुका था —
सिर पर न्याय की मूरत,
हाथों में तराजू और लेखनी।

बेताल बोला —

“यह है *□□□□□□□□□□□* —
वह जो अंधे नहीं, विवेकी न्याय का प्रतिनिधित्व करती है।”

पुतली विक्रम के पास चली आई और उसकी छाती में समा गई।

रात्रि का संवाद - जब बेताल चुप था

विक्रम बोला —

“तू कुछ नहीं बोलेगा, बेताल?”

बेताल बोला —

“न्याय के बाद मौन ही श्रेष्ठ होता है, विक्रम...
तू अब न केवल राजा है,
बल्कि न्याय के सिंहासन का अधिकारी भी बन रहा है...”

क्या आप तैयार हैं…
उस अग्निपरीक्षा के लिए
जहाँ राजा विक्रम को अपने जीवन से प्रिय किसी व्यक्ति को
स्वयं अपने हाथों से खोना पड़ेगा…?

बहुत बढ़िया! अब हम प्रवेश करते हैं उस अध्याय में जहाँ विक्रम को न केवल
अपना सर्वस्व दाँव पर लगाना पड़ेगा,
बल्कि उसे यह भी तय करना होगा कि "राजा क्या अपने निजी रिश्तों और भावनाओं
से ऊपर उठ सकता है?"

यह परीक्षा है "आत्मबलिदान" की —
जहाँ विक्रम को किसी अपने को खोकर आगे बढ़ना होगा।

अध्याय 16: आत्मबलिदान का दीप - जब विक्रम को किसी के प्राण बचाने के लिए अपना सर्वस्व त्यागना पड़ा

अब तक विक्रम ने सात पुतलियाँ प्राप्त कर ली थीं —
उसका यश पूरे भरतखंड में फैलने लगा था।
पर बेताल ने उसे सचेत किया —

“राजन, अब तक तुमने शौर्य, बुद्धि, दया और संयम दिखाया है...
पर एक परीक्षा बाकी है —
वह जिसमें ‘तुम’ नहीं बचोगे...
बल्कि तुम्हारा ‘स्व’ मिट जाएगा।”

अग्नितीर्थ का आह्वान - जहाँ कोई एक ही लौट सकता था

विक्रम और बेताल उत्तर दिशा के एक प्राचीन नगर "श्रुतिपुर" पहुँचे।
यहाँ एक मंदिर था जो ‘अग्नितीर्थ’ कहलाता था —

जहाँ प्रति वर्ष [illegible] देकर
नगर की सूखा, रोग और मृत्यु टलती थी।

इस बार बलिदान के लिए चुनी गई —
"राजकुमारी कलिंगसेना"
वही, जिसे विक्रम कभी प्रेम करता था …
और अब भी मौन रूप से उसके हृदय में स्थान रखती थी।

कलिंगसेना का मौन स्वीकार – एक राजकुमारी का त्याग

विक्रम जैसे ही वहाँ पहुँचा,
वह स्तब्ध रह गया।
राजकुमारी चुप थी —
मानो उसे यह बलिदान स्वीकार हो …

बेताल बोला —

“राजन, यह बलिदान नगर की प्राचीन परंपरा है।
यदि तुम इसे तोड़ते हो, तो श्राप से पूरा नगर नष्ट हो सकता है।”

विक्रम कुछ देर मौन रहा …
फिर मंदिर के पुजारियों से कहा —

“क्या यह बलिदान किसी अन्य योग्य प्राणी से नहीं हो सकता?”

पुजारी बोले —

“बलिदान वही हो सकता है
जो राजवर्ग से हो,
जिसकी आत्मा निष्कलंक हो,
और जिसने अपने जीवन में
कभी मोह, क्रोध या पाप न किया हो।”

विक्रम ने सबको चौंकाते हुए कहा —

“तो फिर मैं … विक्रम … इस बलिदान के लिए प्रस्तुत हूँ।”

बलिदान की वेदी – जब बेताल रो पड़ा

बेताल हिल गया —

“नहीं विक्रम!
तुम नहीं जा सकते …
तुम्हारा उद्देश्य अधूरा रह जाएगा …
तुम 32 गुणों के स्वामी बनने से पहले ही … समाप्त हो जाओगे।”

विक्रम बोला —

“यदि मेरी मृत्यु किसी एक प्राण की रक्षा कर सके,
तो यही मेरी सबसे बड़ी जीत होगी।”

बलिदान से पहले का चमत्कार

जैसे ही विक्रम अग्निवेदी पर चढ़ा,
अचानक एक दिव्य प्रकाश फूटा —
और आकाश से एक स्वर्णपंखी पक्षी प्रकट हुआ।

उसने कहा —

“विक्रम, यह बलिदान परीक्षा थी।
राजा बनने के लिए शस्त्र उठाना सरल है...
पर किसी अपने को बचाने के लिए
अपनी मृत्यु को गले लगाना — वही *□□□□□□□□□□* है।”

वह पक्षी धीरे-धीरे बदल गया एक पुतली में —
जिसकी देह अग्निरश्मियों से बनी थी।

आठवीं पुतली – ‘बलिदानिका’ प्रकट होती है

पुतली ने विक्रम की ओर देखा और कहा —

“अब तुम आठवें गुण — *□□□□□□□□□□* — के स्वामी हो चुके हो।
अब तुम्हारी आत्मा में वो ताप है
जो किसी भी पिशाचिनी या तांत्रिक को जला सकता है।”

बेताल चुप था — उसकी आँखों में पहली बार आंसू थे।

रात्रि विश्राम – जब बेताल ने विक्रम से कहा: “अब तू राजा नहीं, तपस्वी है...”

बेताल बोला —

“राजन... अब मैं तुम्हें मित्र नहीं,
गुरु मानता हूँ।
आज तुमने वो किया
जो न तो गंधर्व कर सके,
न तांत्रिक, न देव...”

विक्रम बोला —

“जब प्रेम का त्याग आत्मा से हो जाए ,
तो वही □□□□ कहलाता है। ”

अध्याय 17: विरोधाभास का द्वार – जब विक्रम को अपने ही स्वरूप से युद्ध करना पड़ा

आठ पुतलियाँ अब विक्रम के भीतर समाहित हो चुकी थीं।
बेताल चुप था … कुछ गम्भीर , कुछ रहस्यमय।

एक रात वह बोला —

“राजन … अब तुम्हें जाना होगा उस द्वार पर
जहाँ तुम्हारा स्वागत करने के लिए
कोई और नहीं ,
बल्कि □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ खड़ा होगा। ”

‘प्रतिबिंबकुंड’ – एक रहस्यमयी झील

विक्रम और बेताल एक काले पर्वतीय क्षेत्र में पहुँचे
जहाँ एक शांत , नीली झील थी —
नाम था प्रतिबिंबकुंड।

बेताल बोला —

“यह झील सत्य नहीं ,
बल्कि केवल □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ को दर्शाती है।
यहाँ जो भी उतरता है ,
उसे उसका □□□□□□-□□□□□ मिलता है —
उसका ही एक वैररूपी स्वरूप। ”

विक्रम ने बिना हिचकिचाए झील में कदम रखा।

स्वरूप का प्रकट होना – ‘विकराल विक्रम’

झील का जल उबालने लगा।
धुएं में से एक योद्धा निकला —
वही कद -काठी , वही वस्त्र , वही तलवार —
पर उसकी आँखें लाल थीं , और मुख विकृत।

वह बोला —

“मैं हूँ तेरा विकराल स्वरूप ,
तेरा अहंकार , तेरा अविश्वास , तेरा डर …
जो तू हमेशा छिपाता रहा। ”

विक्रम ने तलवार निकाल ली।

विकराल विक्रम से युद्ध

दोनों विक्रम — एक सत्य, एक अंध —
भीषण युद्ध करने लगे।

हर वार पर विकराल विक्रम उसे कहता —

“तू राजा नहीं बन सकता,
क्योंकि तू अपने ही मन से डरा हुआ है।”

विक्रम चुप…
हर प्रहार को रोकता, पर उत्तर नहीं देता।

फिर अचानक…
उसने अपनी तलवार फेंक दी।

विजय आत्मस्वीकृति से होती है

विक्रम ने कहा —

“हाँ… तू मेरा ही हिस्सा है।
मैं तुझसे डरता था,
पर अब तुझे स्वीकार करता हूँ।
मैं अधूरा हूँ,
पर यही अधूरापन मुझे आगे बढ़ाता है।”

विकराल विक्रम हँसा… फिर जलने लगा…
और अंत में एक स्मोक पुतली में बदल गया।

नवम पुतली – ‘स्वरूपा’ प्रकट होती है

उस धुएँ से एक शांत स्त्री-पुतली निकली —
जिसके हाथों में आईना था।

बेताल बोला —

“यह है *□□□□□□□*,
जो आत्मज्ञान की प्रतीक है।
जो स्वयं से युद्ध करना जानता है,
वही दूसरों को शांति दे सकता है।”

विक्रम ने पुतली को स्वीकार किया।

रात्रि विश्राम – जब बेताल ने कहा : “जो स्वयं को जान ले , वही ब्रह्म को जान सकता है ”

बेताल ने कहा —

“आज तुमने ‘स्व ’ को स्वीकारा है।
अब तुम अधूरा नहीं ,
बल्कि एक सच्चे राजा के रूप में पूर्ण हो रहे हो। ”

विक्रम ने धीमे से उत्तर दिया —

“जब तक मैं स्वयं से लड़ता रहा ,
मैं विजेता था ही नहीं।
आज हारकर, मैंने अपने भीतर की विजय पाई है। ”

अध्याय 18: करुणा का आखिरी आँसू – जब विक्रम ने शत्रु के लिए भी आँखें भिगोईं

नौ पुतलियाँ अब विक्रम की आत्मा में बस चुकी थीं।
बेताल अब हर रात मौन होता जा रहा था ,
जैसे वह अपने राजा को *□□□□□ □□□□□□□* की ओर बढ़ते देख रहा हो।

बेताल बोला —

“राजन … आज का दिन
तुम्हें उस राह पर ले जाएगा
जहाँ शत्रु और मित्र का भेद मिट जाएगा। ”

मृतगंध दुर्ग – शत्रु की पुकार

विक्रम और बेताल
मध्य भारत के एक उजड़े राज्य “मृतगंध ” पहुँचे।
यहाँ एक युद्धोन्मत्त तानाशाह राजा तृणभद्र रहता था —
जिसने एक समय उज्जैनी पर आक्रमण की कोशिश की थी
और विक्रम द्वारा पराजित किया गया था।

पर अब वह राजा असहाय और विक्षिप्त अवस्था में
अपने महल के एक कोने में पड़ा था।

एक वृद्ध सैनिक की विनती

राजमहल में एक वृद्ध सैनिक ने विक्रम से कहा —

“महाराज विक्रम …
हमारे राजा तृणभद्र अब किसी को नहीं पहचानते,
ना खा सकते हैं, ना चल सकते हैं …
वह दिन-रात आपकी जयजयकार करते हैं —
जैसे उनके भीतर बस आप ही बचे हों।”

बेताल बोला —

“विक्रम … यह वही राजा है
जिसने तुम्हें मृत देखना चाहा था।
अब जब वह असहाय है,
क्या तुम उसे छोड़ दोगे?”

विक्रम का मौन झुकना

विक्रम बिना कुछ कहे
तृणभद्र के समीप गया।
राजा तृणभद्र की आँखें खुलीं —
वह धीरे से बुदबुदाया —

“विक्रम … तू आया है …
तू मेरा बेटा क्यों नहीं हुआ …”

विक्रम की आँखें भर आईं।
उसने तृणभद्र का सिर अपनी गोद में रख लिया।

बेताल की आँखें नम हुईं

बेताल ने कभी कल्पना नहीं की थी
कि एक राजा अपने शत्रु के लिए
इस तरह आँसू बहा सकता है।

उसने धीमे स्वर में कहा —

“यह वही क्षण है
जब राजा से महापुरुष जन्म लेते हैं …”

दसवीं पुतली – ‘करुणिका’ प्रकट होती है

तृणभद्र की देह शांत हो गई —
एक दिव्य रश्मि निकली
जो एक [illegible] में बदल गई।

बेताल बोला —

“यह है [illegible] —
वह जो करुणा की ज्योति से
मानव को देवत्व की ओर ले जाती है।”

पुतली विक्रम में समा गई।

रात्रि संवाद - जब बेताल ने कहा : “अब तू मानव नहीं, मानवीयता का प्रतीक बन रहा है...”

विक्रम बोला —

“शत्रु तो केवल परिस्थितियों के पुत्र होते हैं,
पर करुणा हमें उससे ऊपर उठाकर
मनुष्य बनाती है।”

बेताल ने धीरे से सिर झुकाया —

“राजन ... तुम अब
राज्य नहीं,
दिलों को जीत रहे हो...”

अध्याय 19: गुप्त रक्त - जब विक्रम को पता चला कि बेताल कौन था वास्तव में... और क्यों उसे खोजनी हैं 32 पुतलियाँ?

दस पुतलियाँ प्राप्त करने के बाद
विक्रम और बेताल एक शांत वन में ठहरे हुए थे।

उस रात चाँद की रोशनी तेज़ थी,
पर बेताल का चेहरा उससे भी ज़्यादा उज्ज्वल और अशांत था।

विक्रम ने देखा कि बेताल एक वृक्ष के नीचे बैठा,
अपनी हथेली में कुछ रक्तस्नात स्मृति को निहार रहा था।

बेताल की आँखों में आँसू - पहली बार

विक्रम ने पूछा —

“बेताल ... तू कुछ छिपा रहा है मुझसे।
तेरा व्यवहार बदल रहा है ...
क्या अब तू कहेगा कि तू कौन है वास्तव में ?”

बेताल बहुत देर तक चुप रहा …
फिर उसने कहा —

“राजन ...
अब वो समय आ गया है
जब तुम मेरे ‘साथी ’ नहीं ,
बल्कि मेरे ‘उद्धारकर्ता ’ बनने वाले हो। ”

प्राचीन कथा का खुलासा – बेताल कौन है ?

बेताल धीरे -धीरे अपनी कथा सुनाने लगा।

“मैं बेताल नहीं था ...
मेरा नाम था – [illegible]।
मैं गंधर्वलोक का राजकुमार था।
मेरे पिता [illegible]
और मेरी माता [illegible] —
संगीत और विद्या की देवी थी। ”

शापित जन्म – जब वातश्रवा बना ‘बेताल ’

“मेरे पिता युद्ध और सत्ता में अंधे हो चुके थे।
एक दिन उन्होंने मेरी माँ को अपने ही सिंहासन से नीचे गिरा दिया —
क्योंकि वो उन्हें एक 'अविनाशी सिंहासन ' देने से मना कर रही थी।
उस सिंहासन का नाम था —
‘व्रजसिंहासन ’ —
वो **32** गुणों से युक्त था। ”

“माँ ने शोक में मुझे अपने गर्भ से पृथ्वी पर छोड़ दिया ...
मैं एक शुष्क कुएँ में गिरा ...
चमगादड़ों ने मुझे पाला ...
और वर्षों बाद जब मैंने साधना के बल से
गंधर्वराज को उसी सिंहासन सहित पराजित किया —
तो माँ ने मुझे श्राप दिया ...”

“कि अब से जो भी उस व्रजसिंहासन पर बैठेगा —
[illegible]...
जब तक कोई **32** गुणों से युक्त व्यक्ति उसे पुनः नहीं जाग्रत करता। ”

बेताल का उद्देश्य – क्यों खोज रहा है 32 पुतलियाँ ?

“विक्रम ...
वह सिंहासन अब पृथ्वी की गोद में छिपा है।
माँ ने उसे अलग -अलग 32 स्थानों में बिखेर दिया —
जहाँ उसकी *32 □□□□□□□□* छिपी हैं।
हर पुतली एक गुण की संरक्षक है ...
जो उस गुण की परीक्षा लिए बिना
खुलती नहीं। ”

“मैं नहीं चाहता था कि कोई और
मुझे अपना गुलाम बनाए ...
इसलिए मैंने संकल्प लिया —
कि मैं स्वयं उस व्यक्ति को चुनूँगा
जो *□□□□ □□□□□□* का अधिकारी हो। ”

विक्रम का मौन – जब एक मित्र , एक ऋणी बन गया

विक्रम स्तब्ध था ...

“इसका अर्थ ...
कि मैं केवल एक राजा नहीं ,
तेरे उद्धार का यंत्र हूँ ?”

बेताल ने कहा —

“नहीं विक्रम ...
तू मेरे उद्धार का *□□□□□□* है ,
क्योंकि तू ही वह पुरुष है
जिसमें 32 गुण प्रकट हो रहे हैं। ”

“पर ध्यान रहे ...
जिस दिन तू अंतिम पुतली पाएगा ,
उस दिन तू केवल राजा नहीं रहेगा —
बल्कि *□□□□□□□□□□□* का स्वामी बन जाएगा —
और तेरे समक्ष युद्ध होगा ...
इतिहास और भविष्य के बीच ...”

अंतिम पंक्ति – जब विक्रम ने पहली बार बेताल को गले लगाया

विक्रम ने बेताल को गले लगाते हुए कहा —

“तो चल वातश्रवा ...
अब तू अकेला नहीं ...
अब हम दोनों उस सिंहासन को जगाएँगे —

जिसका उद्देश्य सिर्फ सत्ता नहीं,
बल्कि न्याय और धर्म होगा।”

बेताल की आँखों से एक मोती गिरा —
और उस मोती से ग्यारहवीं पुतली प्रकट हुई —
जिसका नाम था — ‘बंधुता’।

अध्याय 20: शापित पुतली - और एक नारी जो रक्षक नहीं, परिक्षक थी

ग्यारहवीं पुतली ‘बंधुता’ के बाद
बेताल चुप था…
उसकी आँखें किसी अतीत को खोज रही थीं।

विक्रम ने पूछा —
“अब अगला गुण कौन-सा?”

बेताल बोला —
“अब वो पुतली मिलेगी
जो **‘**स्वाभिमान**’** और **‘**त्याग**’** की देवी है **…**
पर सावधान **…**
वह पुतली जीवित है **…**
एक स्त्री के रूप में।
और वह *□□□□ □□□□,*
□□□□ □□□□□□।”

‘नीरवन नगर’ - एक सुनसान प्रदेश जहाँ बसती थी ‘अवन्या’

विक्रम और बेताल
एक वीरान और ठंडी घाटी में पहुँचे।
वहाँ एक पर्वतीय झील के किनारे
एक महिला लकड़ियाँ काट रही थी —
माथे पर भस्म, आँखों में क्रोध, और चेहरे पर शांति का विषाद।

बेताल ने कहा —
“यही है **—** *□□□□□□*…
जिसमें वह पुतली समाहित है
जो *□□□□□□□□□□* का प्रतीक है।”

अवन्या - एक स्त्री जो किसी को भी अपने पास नहीं आने देती

विक्रम उसके पास गया, हाथ जोड़े।
“देवी, मैं विक्रम हूँ **…** आपसे एक गुण माँगने आया हूँ।”

अवन्या ने तेज़ी से कुल्हाड़ी उठाई —
“राजा हो? तो सत्ता चाहिए?
ताकि किसी और स्त्री को दासी बना सको?”

विक्रम चौंका —
“नहीं देवी... मैं सत्ता नहीं, सत्य की खोज में हूँ।”

अवन्या बोली —
“तो सुनो राजा...
मैं उस वंश की संतान हूँ
जिसे राजाओं ने वर्षों तक
बलि, विवाह, और स्वार्थ के नाम पर मिटाया है।
यदि तुम मुझे पराजित कर सको —
तो गुण लो...
वरना लौट जाओ।”

युद्ध नहीं, परीक्षा – एक स्त्री की करुणा और क्रोध की चादर

अवन्या ने तीन प्रश्न रखे विक्रम के समक्ष —
हर प्रश्न एक स्त्री के तीन रूपों से जुड़ा था —

1. “अगर कोई स्त्री युद्ध करे, तो क्या वह कुलवधू कहलाती है या कुलनाशिनी?”
2. “अगर एक स्त्री प्रेम में राजा को छोड़ दे, तो क्या वह दोषिनी है?”
3. “अगर एक माँ अपने पुत्र को राजा बनने से रोके, तो क्या वह कलंकिनी है?”

विक्रम ने सिर झुका लिया…
फिर उत्तर दिया —

“स्त्री वही करती है,
जो सृष्टि को संवार सके।
वह जब तलवार उठाए,
तो रक्षण के लिए...
जब प्रेम छोड़े,
तो स्वाभिमान के लिए...
और जब पुत्र को रोके,
तो उसकी आत्मा को बचाने के लिए।”

पुतली का जागरण – जब स्त्री ने विक्रम को स्वीकार किया

अवन्या की आँखें भर आईं।
उसने विक्रम की ओर देखा —
“राजन, तू राजा नहीं,

अब पुरुष नहीं —
मनुष्य हो गया है। ”

उसके माथे की राख चमकी —
और उसके मस्तक से एक दीप्त पुतली बाहर आई —
जिसका नाम था — ‘स्वाभिमानी’।

रात्रि में आत्ममंथन – जब विक्रम ने नारी को प्रणाम किया

रात्रि में बेताल बोला —

“राजन ...
तुम्हारे राज्य में अब स्त्री के लिए भी सिंहासन होगा —
क्योंकि तुमने *□□□□□□□□□ □□ □□*
सम्मान देना सीख लिया है। ”

विक्रम ने दूर जलती मशालों को देखते हुए कहा —

“जिस राजा की गद्दी पर स्त्री का अपमान हो ...
वह सिंहासन नहीं, शाप है। ”

अध्याय 21: पत्थर का हृदय – जब विक्रम को ऐसा पुरुष मिला जो रो नहीं सकता था ... और उसी के भीतर छिपी थी ‘करुणा की पुतली’

विक्रम और बेताल
अब पहुँचे एक दुर्ग की सीमा पर —
जिसे लोग “जड़गंध दुर्ग” कहते थे।
यहाँ का सेनापति प्रसिद्ध था —
सेनानायक भीषण।

उसने कभी जीवन में किसी की पीड़ा पर
एक आँसू नहीं बहाया था।

भीषण – वह जो हर भावनाओं को पत्थर समझता था

जब विक्रम ने उसके कक्ष में प्रवेश किया,
तो उसे एक सैनिक को कोड़ों से मारते देखा।
सैनिक रो रहा था —
मगर भीषण चिल्ला रहा था —

“दया से सेना नहीं चलती!”

विक्रम बोला —
“सेना बल से चलती है,
पर राज्य करुणा से टिकता है।”

भीषण विक्रम को घूरता रहा —
“राजा हो... पर बातें संतों जैसी...?”

भीषण का रहस्य – एक घटना जिसने उसे कठोर बना दिया

रात को बेताल विक्रम को ले गया
दुर्ग के एक पुराने हिस्से में —
जहाँ एक टूटी हुई मूर्ति के नीचे
एक *[illegible]* बनी थी।

बेताल बोला —

“ये उसकी पत्नी थी — *[illegible]*...
जिसे युद्ध के समय सेनापति ने
सिर्फ इसलिए महल में बंद कर दिया था
क्योंकि वह युद्ध के विरोध में थी।”

“और एक दिन वह आग में झुलस गई —
और सेनापति ने कसम खा ली —
कि अब वह कभी नहीं रोएगा।”

विक्रम की युक्ति – एक मृत प्रेम को पुनः जीवित करना

विक्रम उस समाधि पर बैठ गया
और मृदंग, वीणा, और भजन की सहायता से
सुमेधा की स्मृति को पुकारने लगा।

भीषण जब वहाँ पहुँचा
और सुमेधा की मूर्ति से सुगंध उठी,
तो उसकी आँखें फड़कने लगीं।

विक्रम ने कहा —

“क्या अब भी तुम रोओगे नहीं...?”

भीषण काँपते हुए बोला —

“मैं मर जाऊँगा... पर आँसू नहीं बहाऊँगा...”

और तभी…

अचानक बारिश हुई … पर ये वर्षा नहीं, आँसू थे

भीषण की आँखों से
बिना उसकी इच्छा के
अचानक आँसू बह निकले।

उसने मुट्ठियाँ भींच लीं —
“मैं … हार गया सुमेधा … मैं हार गया …”

करुणा की पुतली – ‘द्रविका’ प्रकट होती है

सुमेधा की समाधि से
एक चमकता हुआ मोती निकला,
जो एक सुंदर पुतली में बदल गया।

बेताल बोला —

“ये है *□□□□□□□* — करुणा की देवी।
जिसके बिना वीरता भी निर्दयी बन जाती है।”

विक्रम ने पुतली को सिर झुकाकर स्वीकार किया।

रात्रि संवाद – जब बेताल ने कहा: “जब पुरुष रोना सीख ले, तभी सच्चा शौर्य जन्म लेता है”

विक्रम बोला —

“राजा का कर्तव्य केवल लड़ना नहीं,
बल्कि रोते हुए को गले लगाना भी है।”

बेताल मुस्कुराया —

“और तुम यह कर चुके हो, विक्रम।
अब तुम्हारा पथ और कठिन होगा —
क्योंकि अब तुम्हारा अगला शत्रु
‘माया’ होगी —
जो सत्य को छुपा सकती है।”

अध्याय 22: मायाजाल की नगरी – जब विक्रम को मिला ‘विवेक’ का वरदान

ग्यारह पुतलियाँ अब विक्रम के भीतर थीं,
पर अगली पुतली की खोज उन्हें ले गई

एक विचित्र नगरी की ओर —
जिसका नाम था ‘प्रतिलोमपुर’।

यह नगर बाहर से अत्यंत सुंदर था —
इन्द्रधनुषी रंग, हँसते लोग,
पर भीतर हर बात झूठ पर टिकी थी।

प्रतिलोमपुर – जहाँ झूठ सच की तरह लगता था

बाजार में लोग ज़ोर से कहते —

“झूठ बोलो, इनाम पाओ!”
“सच बोलोगे, तो दंड मिलेगा!”

बेताल बोला —

“ये नगरी शापित है...
यहाँ जो सत्य बोले, वह दिखाई नहीं देता,
और जो झूठ बोले, वो राजा बन जाता है।”

नकली राजा – जो हर निर्णय उल्टा करता है

विक्रम को महल में ले जाया गया,
जहाँ एक □□□□ □□□□□□ राज्य कर रहा था।

उसका निर्णय —

- चोर को न्यायाधीश बनाओ,
- दासी को रानी,
- और संत को जेल में डालो।

विक्रम ने देखा —
यहाँ की प्रजा हँसती ज़रूर थी,
पर आँखों में भय था।

विवेक की परीक्षा – तीन विपरीत सलाह

विक्रम को दरबार में बुलाकर
नकलराज ने तीन झूठे सलाहकार भेजे:

1. “तुम उज्जैनी छोड़ दो — वहाँ अपशगुन है।”
2. “बेताल को छोड़ दो — वह शत्रु है।”
3. “सत्ता चाहिए तो सत्य छोड़ो।”

विक्रम शांत रहा।
फिर उसने कहा —

“जो नगर सत्य से डरता है,
वह स्वयं अपने पतन का द्वार खोलता है।”

विवेक का उदय – जब विक्रम ने माया को चीर दिया

विक्रम ने तीन युक्तियाँ कीं —

- उसने झूठ की बोली बोली —
  “मैं उज्जैनी छोड़ रहा हूँ।”
  सबने ताली बजाई।
- उसने फिर कहा —
  “मैं बेताल को त्याग रहा हूँ।”
  दरबार हँसा।
- फिर उसने मुस्कराकर कहा —
  “और अब मैं इस राज्य को सत्य की राह पर लाने के लिए सबको दंड दूँगा।”

तभी दरबार की सारी सजावट
धुएँ में बदल गई —
□□□□□□□□□□ □□□ □□□

तेरहवीं पुतली ‘विवेका’ प्रकट होती है

राजसिंहासन से एक रश्मि निकलकर
एक ज्योतिर्मयी पुतली में बदल गई।

बेताल बोला —

“यह है *□□□□□□* —
जो माया में भी सही निर्णय लेने की शक्ति देती है।”

रात्रि में संवाद – जब बेताल ने कहा: “राजा का सबसे बड़ा शस्त्र तलवार नहीं, विवेक होता है”

विक्रम ने उत्तर दिया —

“तलवार से दुश्मन मारे जा सकते हैं,
पर बिना विवेक के,
राजा अपने अपनों को खो देता है।”

अध्याय 23: मृत्युलोक की स्त्री – और 'क्षमा' की अग्निपरीक्षा

तेरह पुतलियाँ विक्रम के भीतर थी।
बेताल अब अधिक गंभीर हो चुका था।

उन्होंने यात्रा की…
एक रेतीले मैदान को पार किया,
जहाँ कोई मनुष्य नहीं —
सिर्फ़ राख उड़ती थी…
और दूर एक औरत…
श्मशान की राख से खेल रही थी।

उसका नाम था —
"शमया"।

शमया – श्मशान की स्त्री जो मृत आत्माओं को सुलाती थी

वह न कोई तांत्रिक थी,
न कोई देवी…
वो एक मनुष्य थी —
मगर समय ने उसे अलौकिक बना दिया था।

विक्रम ने उससे पूछा —

"तुम इस निर्जन भूमि में क्यों रहती हो?"

वो बोली —
"मैं उन आत्माओं की माँ हूँ
जिन्हें जीते जी क्षमा नहीं मिली।"

"जब तक कोई उन्हें क्षमा नहीं करता,
वे शांति नहीं पा सकतीं।"

तीन आत्माएँ – जो विक्रम के सामने आईं

शमया ने मंत्र पढ़ा —
तीन आत्माएँ प्रकट हुईं,
जो अपने जीवन में विक्रम से जुड़ी थीं:

1. एक सैनिक —
   जिसे विक्रम ने युद्ध में पराजित किया और प्राण लिया।
2. एक गुप्तचर —
   जिसे विक्रम ने देशद्रोही समझकर जेल में डलवा दिया था, पर वो निर्दोष था।

3. एक बालक —
   जो उज्जैनी के युद्ध में मारा गया, और उसका पिता आज भी रोता है।

विक्रम की आत्मग्लानि – क्या वह सच्चा राजा था ?

विक्रम के हृदय में कुछ टूटता सा महसूस हुआ।
उसने तीनों की ओर देखा …
फिर उनके चरणों में झुक गया —

“यदि मेरी किसी भूल ने
तुम्हारी आत्मा को व्यथा दी,
तो मैं तुम्हें क्षमा नहीं देता,
बल्कि *[illegible]*।”

तीनों आत्माएँ जल में विलीन हो गईं।

‘क्षमा’ की पुतली प्रकट होती है

श्मशान की राख से
एक शुभ्र ज्योति निकली —
और वह एक सुंदर पुतली बन गई।

बेताल ने कहा —

“ये है *[illegible]* —
जो उस राजा के पास जाती है
जो दंड देने से पहले
क्षमा करने की हिम्मत रखता है।”

रात्रि संवाद – जब बेताल ने कहा : “क्षमा, दुर्बल की नहीं … सम्राट की शक्ति है”

विक्रम बोला —

“जब तक मैंने केवल राज किया,
मैं न्याय करता रहा …
पर अब जब मैं *[illegible]* बन रहा हूँ,
तो मुझे क्षमा भी करनी होगी।”

अध्याय 24: कालदर्पण – जब विक्रम ने देखा अपना अंत, और पाया 'दृढ़ संकल्प' का वरदान

अगली पुतली उन्हें मिलने वाली थी
“संकल्पा”,

जो केवल उसी को मिलती है
जो अपनी मृत्यु का सामना बिना विचलित हुए कर सके।

बेताल विक्रम को
एक सुनसान गुफा में ले गया —
जहाँ दीवारें काली थीं, और हवा स्थिर।

गुफा के भीतर
एक काँच का दर्पण था,
जिसे कहा जाता था —
“कालदर्पण”।

कालदर्पण – जहाँ देखने वाला अपने भविष्य को देखता है

बेताल ने चेताया —

“राजन…
यह दर्पण तुझ पर तेरी मृत्यु,
तेरी हार, और तेरा अंतिम एकांत दिखाएगा।
अगर तू डगमगाया,
तो पुतली नहीं मिलेगी।”

विक्रम ने बिना हिचक के
दर्पण में झाँक लिया…

विक्रम का भविष्य – सिंघासन टूटा, उज्जैनी जली, बेताल लहूलुहान

उसने देखा:

- उज्जैनी के मंदिर ध्वस्त थे…
- चित्रलेखा राक्षसी अट्टहास कर रही थी…
- शैतान बालक महल में रक्त स्नान कर रहा था…
- बेताल लोहे की श्रृंखलाओं में बंधा, कराह रहा था…
- और स्वयं विक्रम —
  गुप्त पिंजरे में बंद, अधजली हालत में।

पर विक्रम नहीं डगमगाया… उसने तलवार उठाई

विक्रम ने दर्पण को देखा और कहा —

“यदि यह भविष्य है —
तो मैं इसे बदलूँगा।
मैं उज्जैनी को मिटने नहीं दूँगा,
बेताल को बंदी नहीं रहने दूँगा,
और स्वयं को नहीं जलने दूँगा!”

“मैं लड़ूँगा **...** जब तक अंतिम श्वास **!”**

‘संकल्पा **’** की पुतली प्रकट होती है

कालदर्पण फट गया —
उसके भीतर से
एक आग सी निकलकर
सुनहरी ज्योति में बदल गई —
जिसने पुतली का रूप ले लिया।

बेताल बोला —

“यह है *□□□□□□□* **—**
जो राजा को हार से भी टकराने का साहस देती है। **”**

रात्रि संवाद **-** जब बेताल ने कहा **: “**जिसे मृत्यु का भय नहीं **,** वही अमरता के योग्य है **”**

विक्रम बोला —

“अब मुझे कोई भ्रम नहीं **...**
जिस दिन मैं डर गया **,**
उस दिन उज्जैनी का सूर्य अस्त हो जाएगा।
और जब तक मैं खड़ा हूँ **—**
तब तक यह धरती काँपेगी नहीं। **”**

अध्याय 25: आत्मबलिदान - जब एक माँ ने अपने पुत्र का अंत स्वयं चुना , ताकि राज्य बचे

विक्रम और बेताल
अब पहुँचे एक छोटी सी रियासत —
जिसे लोग कहते थे "विरक्तगढ़ "।

यहाँ की महारानी थीं —
देविका देवी —
एक निडर , नीति -निपुण और धार्मिक रानी ,
जिसका एक ही पुत्र था — राजकुमार अर्णव।

समस्या **:** राज्य की शांति या बेटे की रक्षा **?**

राज्य में एक ऐसा समझौता हुआ था —
जिसके अनुसार,
अगर विरक्तगढ़ को बचाना है,
तो राज्य को
एक बलि देनी होगी —
और बलि में
राजपरिवार का कोई उत्तराधिकारी होना चाहिए।

देविका देवी ने सभा बुलाई —
और बोली —

“मेरे पुत्र अर्णव की बलि दी जाएगी।”

राज्य में हाहाकार – माँ बनाम रानी

प्रजा चौंक गई।
अर्णव स्वयं काँप गया।
मंत्रियों ने विरोध किया।

पर रानी बोली —

“मैं आज केवल रानी नहीं,
राजधर्म की पालक हूँ।
राज्य रहेगा, तो पुत्रों का जन्म फिर होगा।
पर राज्य चला गया, तो सब कुछ अंत।”

बलिदान की रात – जब माँ ने बेटे से विदा ली

अर्णव बोला —

“माँ... क्या आप मुझे स्नेह नहीं करतीं?”

देविका देवी ने उसे गले लगाकर कहा —

“राजकुमार को स्नेह से नहीं,
धर्म से विदा किया जाता है।
मैं रोऊँगी... पर रुकूँगी नहीं।”

रात को, बलि वेदी पर
देविका देवी ने स्वयं अपने हाथों से
अर्णव को चिता पर बैठाया...
और प्रार्थना की —

“हे विधाता **...**
मुझे माँ कहने का अधिकार न देना
यदि ये त्याग छल हो। **”**

तभी आकाश से अग्निपुंज फटा और पुतली प्रकट हुई

अर्णव के शरीर को कोई हानि नहीं हुई।
बलिदान के लिए
[illegible]

राख के बीचोंबीच
एक दिव्य पुतली खड़ी थी।

बेताल बोला —

“यह है *[illegible]* **—**
राजा का वह गुण **,**
जो उसे सत्ता से ऊपर ले जाकर
उसे लोकनायक बनाता है। **”**

रात्रि संवाद **–** जब बेताल ने कहा **:** “सिंहासन केवल तलवार से नहीं **,**
त्याग से भी जीता जाता है **”**

विक्रम बोला —

“मैं जानता था कि मृत्यु से जीतना कठिन है **...**
पर अब समझा कि *[illegible]* करना
मृत्यु से भी कठिन है। **”**

अध्याय **26:** स्वप्नविहीन नगर **–** जहाँ लोग जीते हैं **,** पर सपने नहीं देखते

विक्रम और बेताल
अब पहुँचे एक नगर —
जिसका नाम था "अश्नपुर"।

यह नगर चमकदार अवश्य था ,
मगर बिलकुल मौन।
बच्चे खेलते नहीं थे ,
युवक कुछ मांगते नहीं थे ,
और वृद्ध ... बस पत्थर जैसे बैठे रहते थे।

नगर की विशेषता : कोई सपना नहीं देख सकता

विक्रम ने एक युवक से पूछा —

“क्या तुम नहीं चाहते कि राजा बनो?”
युवक बोला —
“नहीं।”

“क्या तुम कुछ और सीखना चाहते हो?”
“नहीं।”
“क्या तुम प्रेम करना चाहते हो?”
“...मुझे समझ नहीं।”

विक्रम चौंक गया।
यहाँ के लोगों के पास
कल्पना ही नहीं थी।

राजा निरुत्साह - जिसने स्वप्नों को ज़हर मान लिया

नगर के राजा का नाम था —
विज्ञानेंद्र।

वो एक विचारक था —
जिसने अपने नगर को
“स्वप्नविहीन” बनाने के लिए
एक औषधि बनवाई थी —
“स्मृतिसुप्ति”।

जो भी उस नगर में आता,
उसकी इच्छाएं मुरझा जातीं।

विज्ञानेंद्र बोला —

“सपने दुःख देते हैं।
मैंने अपने नगर से दुःख मिटा दिया।”

विक्रम की चुनौती : बिना इच्छा के कुछ भी असंभव है

बेताल बोला —

“विक्रम, यह नगर सांस लेता है,
पर जीता नहीं है।
यहाँ आशा की चिंगारी बुझ चुकी है।”

विक्रम ने निर्णय लिया —
“मैं इस नगर को पुनः सपना दूँगा।”

एक चिंगारी – एक बच्चा, एक कहानी, एक सपना

विक्रम ने रात को एक बच्चे को
एक कहानी सुनाई —
राजा की, जो उड़ने लगा...

बच्चे की आँखों में चमक आई —
“क्या मैं भी उड़ सकता हूँ?”

विक्रम बोला —
“यदि तुम सपना देखो... तो हाँ।”

धीरे-धीरे नगर में बदलाव

लोगों ने कहानियाँ सुनीं,
चित्र बनाना शुरू किया,
गीत रचे गए,
और अचानक एक दिन —
नगर के मध्य स्थित कुएं से
एक सुनहरी धूप सी निकली —
जिसमें से प्रकट हुई “आशा” की पुतली।

बेताल बोला — “यह है ‘आशा’ — स्वप्न की देवी”

“जब कोई राजा
अपने प्रजाजनों को सिर्फ भोजन नहीं,
बल्कि कल्पना भी दे —
तो वही राज्य □□□□□ कहलाता है।”

रात्रि संवाद – जब विक्रम ने कहा: “राजा वह है जो सबसे पहले सपना देखे, और सबसे अंत तक उससे लड़े”

बेताल बोला —

“और तुम वह राजा बनते जा रहे हो, विक्रम।
पर अगले अध्याय में,
तुम्हें एक ऐसा सत्य जानना होगा
जो तुम्हारे हृदय को हिला सकता है।”

अध्याय 27: बेताल की माँ - जब विक्रम को मिली बेताल की उत्पत्ति की कथा और ‘निष्ठा’ की परीक्षा

बेताल आज चुप था…
विक्रम ने पूछा—

“कहाँ चलें आगे?”
बेताल बोला—
“अब जिस स्थान पर जाना है…
वहाँ मैं बोलूँगा कम… और सुनूँगा अधिक।”

वे पहुँचे एक घने, पुराने और शापित जंगल में—
“निष्कंप वान”,
जहाँ पेड़ भी हिलते नहीं थे…
जहाँ हर दिशा में मृत्यु की गंध थी।

बेताल की स्मृति जागी - सूखे कुएँ की पीड़ा

अचानक बेताल ठिठक गया…
उसने एक जले हुए वृक्ष के नीचे बैठते हुए कहा—

“यहीं मेरी माँ रोया करती थी…
जब मैं सूखे कुएँ में पड़ा तिल-तिल जी रहा था।”

“गंधर्वराज ने मेरी माँ को छोड़ दिया,
क्योंकि मैं 'अपशकुन' कहा गया।
मेरे जन्म से पहले ही
मेरे जीवन पर निर्णय सुनाया गया था।”

विक्रम को मिली बेताल की माँ की आत्मा

विक्रम ने मंत्र पढ़ा—
श्मशान-सी हवा चली…
और एक करुण, दिव्य आत्मा प्रकट हुई—

“मैं हूं शीतलगंधा,
बेताल की माँ।
मैंने अपने पुत्र को इसलिए छोड़ दिया
क्योंकि वह मेरे पति के पतन का कारण कहा गया।
मगर हर रात… मैं उस कुएँ के पास बैठ
उसकी साँसें गिनती रही।”

शाप का रहस्य

शीतलगंधा बोली —

“मैंने अपने ही पुत्र को शाप दिया था —
कि जो भी मेरे पति को मारकर
सिंहासन हड़पेगा,
वो सदा □□□□ रहेगा।
बेताल ने यही किया —
इसलिए वो कभी मुक्त नहीं हो सका।”

बेताल फूट-फूट कर रो पड़ा…

विक्रम की निष्ठा की परीक्षा

बेताल बोला —

“राजन, क्या तुम अब भी मुझे अपना मित्र मानते हो,
जबकि मैं शापित, राक्षसी उत्पत्ति और हत्या का भागीदार हूँ?”

विक्रम चुप रहा…
फिर बेताल के पास आकर
उसके माथे पर हाथ रखा और बोला —

“तू मेरे साथ नहीं आया था…
मैं तुझे खोज लाया था।
और मैं अपने साथियों को
उनके अतीत से नहीं,
उनकी □□□□□□ से मापता हूँ।”

पुतली ‘निष्ठा’ प्रकट होती है

जंगल की सूखी भूमि फटी…
और एक नीली, तेजस्विनी पुतली ऊपर उठी।

बेताल बोला —

“यह है □□□□□□ —
जो राजा को संकट में साथी नहीं छोड़ने देती।”

रात्रि संवाद – जब बेताल ने कहा: “जो अपने साथियों के लिए खड़ा हो, वही सच्चा सम्राट है”

विक्रम बोला —

“राजा तलवार से युद्ध जीत सकता है,
पर निष्ठा से □□□।”

अध्याय 28: चित्रलेखा का पुनः उदय – जब झुलिया काकी का छल खुला, और विक्रम ने पाई 'रणनीति चातुर्य' की पुतली

उज्जैनी में अब शांति का भ्रम था —
मगर भीतर ही भीतर
झुलिया काकी और नर पिशाचिनी
अपनी अंतिम योजना पर काम कर रहे थे।

चित्रलेखा अब पूर्णतः
शैतानी शक्ति के प्रभाव में आ चुकी थी।
उसके चेहरे पर मुस्कान थी,
मगर आत्मा में राख़ जल रही थी।

काले रक्त की औषधि – चित्रलेखा का परिवर्तन

झुलिया काकी ने
चित्रलेखा को एक विशेष औषधि दी —
जिसे नर-पिशाचिनी ने तैयार किया था।

जैसे ही चित्रलेखा ने उसे पिया,
उसकी आँखें काली पड़ गईं,
बाल काले धुएँ जैसे उड़ने लगे,
और शरीर पर तांत्रिक चिन्ह उभर आए।

अब वह एक रानी नहीं,
एक अधूरी पिशाचिनी बन चुकी थी।

चित्रलेखा का षड्यंत्र – भर्तहरी को वश में करना

चित्रलेखा अब
भर्तहरी को पूरी तरह वश में करने लगी।
वह हर दिन उसके खाने में
माया की बूटी मिलाती,
और उसे धीरे-धीरे भक्त से
निर्णयहीन राजा बना देती।

भर्तहरी अब
बस बच्चों सा व्यवहार करने लगा था।

झुलिया काकी का रहस्य खुलता है

इसी बीच
महल के एक पुराने सेवक ने

विक्रम को एक गुप्त कोठरी के बारे में बताया —
जहाँ झुलिया काकी
हर अमावस्या को तंत्र साधना करती थी।

विक्रम और बेताल
उस कोठरी में पहुँचे और देखा —
झुलिया काकी
एक तांत्रिक पुस्तक से संवाद कर रही थी।

विक्रम को पता चला —
झुलिया काकी नर-पिशाचिनी की बहन थी!

विक्रम की योजना – “शक्ति से नहीं, चाल से जीतूँगा”

विक्रम जान गया
कि इस बार युद्ध केवल तलवार से नहीं होगा।
उसे खेलना होगा
एक बुद्धिमान शतरंज का खेल।

उसने चित्रलेखा के कमरे में
विशेष दर्पण लगवाए
जो तांत्रिक छवि को पकड़ सकते थे।

और एक दिन
राजसभा के सामने
चित्रलेखा का [illegible]
सभी ने देख लिया।

सभा में हाहाकार – विक्रम का संकेत और बेताल की तांत्रिक चाल

चित्रलेखा चीखी —
पर विक्रम पहले ही
बेताल के माध्यम से
विशेष मंत्र पढ़वा चुका था
जिससे उसकी शक्ति क्षीण हो गई।

भर्तहरी को भी विक्रम ने
एक विशेष औषधि देकर
उसके भ्रम से बाहर निकाला।

रणनीति की पुतली प्रकट होती है

सभा के मध्य
एक दिव्य पुतली प्रकट हुई —
जिसके हाथों में □□□□□ □□ □□□□ थी।

बेताल बोला —

“यह है ‘चातुरा’ —
रणनीति चातुर्य की पुतली,
जो उस राजा को मिलती है
जो शस्त्र से नहीं,
मस्तिष्क से युद्ध करता है।”

रात्रि संवाद - जब बेताल ने कहा: “ताकत राजा को जिताती है, पर चतुराई उसे स्थायी बनाती है”

विक्रम बोला —

“अब उज्जैनी का युद्ध
तलवार और मंत्र से नहीं,
रणनीति से जीतूँगा।”

अध्याय 29: मोह और वैराग्य - जब विक्रम को चुनना पड़ा प्रेम या सिंहासन, और मिली ‘वैराग्य’ की पुतली

बेताल और विक्रम
अब लौटे थे एक विशेष राज्य में —
कलिंग,
जहाँ कभी विक्रम की मुलाक़ात हुई थी
राजकुमारी कलिंगसेना से।

इस बार कलिंगसेना ने
विक्रम को देखकर अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं —

“क्या अब भी तुम मुझे प्रेम करते हो, राजन?”

विक्रम मौन था…
क्यूँकि वह जानता था
कि प्रेम और सत्ता का संगम
अक्सर विनाश की ओर ले जाता है।

प्रेम की गहराई और एक कठिन शर्त

राजकुमारी के भाई ,
युद्धाजित ,
ने फिर दोहराया अपनी शर्त —

“यदि मेरी बहन से विवाह करना है ,
तो उज्जैनी का अगला सम्राट बनो।”

विक्रम चौंका —
क्यूँकि वह जानता था
कि भर्तहरी अब पुनः जाग चुके हैं ,
और चित्रलेखा पर से मोह भी हट गया है।

राज्य किसी भी क्षण
फिर से विक्रम को सौंपा जा सकता था …

पर क्या वह अपने भाई के त्याग को
यूँ ही ठुकरा सकता था ?

बेताल का प्रश्न - क्या राजा को प्रेम करना चाहिए ?

रात को बेताल ने विक्रम से पूछा —

“यदि कलिंगसेना तुम्हारा हृदय है ,
और उज्जैनी तुम्हारा धर्म —
तो किसे चुनोगे ?”

विक्रम बोला —

“मैं हृदय को पीड़ा दे सकता हूँ ,
पर धर्म को धोखा नहीं।”

विक्रम का निर्णय - त्याग का व्रत

अगली सुबह
विक्रम ने कलिंगसेना से कहा —

“तुम्हारे प्रेम की गरिमा इतनी महान है
कि मैं उसे ताज से कलंकित नहीं करना चाहता।
मैं न तो सम्राट बनूँगा
और न ही तुम्हारा पति।
मैं एक युग की यात्रा पर हूँ …
और यह यात्रा अकेले तय करनी होगी।”

कलिंगसेना का उत्तर - प्रेम का सर्वोच्च बलिदान

कलिंगसेना ने मुस्कुराकर कहा —

“विक्रम, प्रेम मांगता नहीं…
प्रार्थना करता है।
और मेरी प्रार्थना यही है —
कि तुम उस सिंघासन पर बैठो
जिसके तुम योग्य हो।”
और वह जंगल की ओर चल पड़ी,
सदा के लिए।

वैराग्य की पुतली प्रकट होती है

जैसे ही विक्रम की आँखों से
एक आँसू गिरी —
धरती हिली,
और एक साध्वी रूपी पुतली प्रकट हुई।

बेताल बोला —

“यह है ‘वैराग्या’ —
जो उस राजा को मिलती है
जो अपने मोह को त्यागकर
लोक-कल्याण की राह पर चलता है।”

रात्रि संवाद - जब बेताल ने कहा: “वैराग्य राजा का श्रृंगार है,
और मोह उसकी बेड़ियाँ”

विक्रम बोला —

“अब मैं केवल प्रेमी नहीं,
धर्म का सेवक हूँ।”

अध्याय 30: सिंहासन के रक्षक - जब विक्रम को मिली उस रहस्यमयी गुफा की पहली झलक, जहाँ बत्तीस पुतलियों का द्वार छिपा था...

विक्रम और बेताल
अब एक गहरी, रेतीली घाटी में प्रवेश कर रहे थे —
जिसे कहा जाता था
"निस्तब्ध गर्त",
जहाँ सदियों से न कोई गया,
न कोई लौटा।

बेताल बोला —

“राजन , अब तुम्हारा धैर्य ,
बुद्धि , निष्ठा , प्रेम और वैराग्य —
सबकी परीक्षा एक साथ होगी। ”

विक्रम को मिली पथरीली शिला , जिस पर लिखा था - ‘न भूतो , न भविष्यति ’

एक पथरीली दीवार पर
शिलालेख उकेरा गया था —

“यहाँ वह विराजता है
जो स्वयं सिंहासन का रक्षक है —
न वह मृत है ,
न जीवित ,
और न ही समय से बंधा। ”

गुफा के द्वार पर बंधी थी राक्षसी माया

गुफा के द्वार के ठीक सामने
एक विशाल राक्षसी आकृति बनी थी —
मगर जैसे ही विक्रम ने आगे बढ़ना चाहा ,
गुफा ने एक *□□□□□* निकाली —
“तुम कौन हो , जो इस रहस्य की ओर बढ़ता है ?”

बेताल ने धीरे से कहा —

“उत्तर मत दो , विक्रम।
यह द्वार भावों को पढ़ता है —
यदि कोई झूठ बोले ,
तो यह उसे *□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□*। ”

विक्रम की परीक्षा - सत्य के आधार पर प्रवेश

विक्रम ने आँखें बंद कीं ,
हाथ जोड़े , और बोला —

“मैं कोई विशेष नहीं ,
मैं केवल वह हूँ
जिसे धर्म , निष्ठा , और प्रेम
ने यहाँ तक पहुँचाया है।
मैं वह नहीं हूँ जो सिंहासन चाहता है ,
मैं वह हूँ जो अपने राज्य की रक्षा करना चाहता है। ”

गुफा की चट्टानें काँपीं …
और द्वार के ऊपर जड़ित नवम पुतली प्रकट हुई —
जिसका नाम था : "स्वीकृति "।

बेताल बोला — "अब सिंहासन का द्वार खुल गया है"

विक्रम की आँखों के सामने
एक सुनहरी रोशनी फूटी —
और एक गुप्त द्वार धीरे-धीरे खुला
जिसके भीतर
32 □□□□□ □□ □□□□ दिखाई दी …

हर कमरे में प्रतीक्षा कर रही थीं
वो पुतलियाँ,
जो राजा विक्रम के भीतर छिपे
गुणों को पहचानना चाहती थीं।

रात्रि संवाद – जब बेताल ने कहा : "अब कहानी मोड़ पर नहीं, युद्ध के द्वार पर है"

"यहाँ से आगे न मैं तुम्हारी मदद कर पाऊँगा,
न तुम्हारे शत्रु तुम्हें अकेला छोड़ेंगे।
तुम्हें स्वयं उस सिंहासन तक पहुँचना होगा
जिसे सृष्टि के प्रारंभ में देवताओं ने रचा था।"

अध्याय 31: पहली पुतली का द्वार – जब विक्रम का सामना हुआ उस पुतली से, जो वीरता की परीक्षा लेती है, और खुला 'शौर्य' का रहस्य

विक्रम ने जैसे ही गुफा के भीतर कदम रखा,
उसके चारों ओर की हवा भारी हो गई।
हर दीवार में कुछ फुसफुसाहटें थीं,
मानो कोई उसे भविष्य की चेतावनी दे रहा हो।

बेताल पीछे रह गया था,
और यह पहला द्वार
विक्रम को अकेले पार करना था।

द्वार खुलते ही सामने थी अग्निपुंज में बैठी पहली पुतली

वह पुतली अग्नि के मध्य थी।
आँखें अंगारों सी,
आवाज़ गूंजती हुई —

“मैं हूँ शौर्यवती — पहली पुतली।
सिंहासन का पहला रक्षक।
जिसने सौ युद्ध लड़े और सौ बार स्वयं को भस्म किया,
केवल अपने धर्म की रक्षा हेतु।
क्या तुम में है वह शौर्य, विक्रम?”

तीन युद्धों की परीक्षा

पुतली बोली —
"तुम्हें तीन युद्ध लड़ने होंगे —
मगर ये युद्ध बाहरी नहीं,
तुम्हारे भीतर के होंगे…"

1□ □□ □□ □□□□□

चारों ओर अंधकार छा गया।
विक्रम को दिखे उसकी माँ, उसका भाई भर्तहरी,
और उज्जैनी जलती हुई…
एक आवाज़ आई —

“क्या तुम मरते हुए अपनों को देख सकते हो और फिर भी राजा रह सकते हो?”

विक्रम की आँखों से आँसू गिरे,
मगर उसने तलवार उठाई और बोला —
“अगर मैं न लड़ूँ, तो सब मरेंगे।”
अंधकार छंट गया।

2□ □□□□□□□ □□ □□□□□

सामने स्वर्ण सिंहासन…
राज्य, प्रेम, और अमरत्व की वाणी…
“अब यहीं रुक जाओ, विक्रम।
कहीं और जाने की ज़रूरत नहीं।”

विक्रम ने आँखें बंद कीं —
“जिस सुख में मेरी प्रजा नहीं,
वो सुख मेरे लिए मृत्यु है।”
स्वर्ण सिंहासन मिट्टी बन गया।

3□ □□□□□ □□ □□□□□

अब उसके सामने उसका दूसरा रूप —
क्रोधित, दंभ से भरा विक्रम।
“तू सबका उद्धारक बनना चाहता है?
क्या तू खुद को जानता है?”

विक्रम चुप रहा…
और उसने अपना हाथ अपने क्रोधित स्वरूप पर रखा —
“मैं पूर्ण नहीं…
पर मेरी अधूरी कोशिशें भी किसी की रक्षक बन सकती हैं।”

द्वार रोशनी से भर गया।

शौर्य की पुतली विक्रम को आशीर्वाद देती है

वह अग्नि शांत हो गई।
पुतली सामने आई और बोली —

“तू डरता है, पर डटा रहता है।
तू रोता है, पर रुकता नहीं।
तू क्रोधित होता है, पर न्याय नहीं भूलता।
तू ही है *[illegible]*।”

उसने विक्रम के मस्तक पर
शौर्य का तेज भर दिया।

पिछली गुफा में बेताल मुस्कराया — "एक गुण और बढ़ा"

बेताल ने दूर खड़े देखा,
और बोला —

“अब तू सिंहासन से एक कदम और निकट है।

क्रमशः